ISSN 2277-7660

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका

अमर ज्योति

वर्षः 68 अंकः 5 मई, 2017

बिश्नोई समाज के प्रमुख धाम

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

सम्वत् 2074 ज्येष्ठ की अमावस्या

लगेगी- 24.5.2017, बुधवार, देर रात 5.07 बजे

अर्थात् 25.5.2017, गुरुवार, को सूर्योदय से 45 मिनट पूर्व

उतरेगी-25.5.2017, गुरुवार रात्रि 1.14 बजे

सम्वत् 2074 आषाढ़ की अमावस्या

लगेगी-23.6.2017, शुक्रवार, प्रातः 11.49 बजे

उतरेगी-24.6.2017, शनिवार, प्रातः 8.00 बजे

सम्वत् 2074 श्रावण की अमावस्या

लगेगी-22.7.2017, शनिवार, सायं 6.27 बजे

उतरेगी-23.7.2017, रविवार, सायं 3.15 बजे

उनतीस धर्म नियम

- तीस दिन सूतक रखना।
- पांच दिन ऋतुवन्ती स्त्री का गृहकार्य से पृथक् रहना।
- प्रतिदिन सवेरे स्नान करना।
- शील का पालन करना व संतोष रखना।
- बाह्य और आन्तरिक पवित्रता रखना।
- द्विकाल संध्या-उपासना करना।
- संध्या समय आरती और हरिगुण गाना।
- निष्ठा और प्रेमपूर्वक हवन करना।
- पानी, ईंधन और दूध को छान कर प्रयोग में लेना।
- वाणी विचार कर बोलना।
- क्षमा-दया धारण करना।
- चोरी नहीं करनी।
- निन्दा नहीं करनी।
- झूठ नहीं बोलना।
- वाद-विवाद का त्याग करना।
- अमावस्या का व्रत रखना।
- विष्णु का भजन करना।
- जीव दया पालणी।
- हरा वृक्ष नहीं काटना।
- काम, क्रोध आदि अजरों को वश में करना।
- रसोई अपने हाथ से बनानी।
- थाट अमर रखना।
- बैल बधिया नहीं कराना।
- अमल नहीं खाना।
- तम्बाकू का सेवन नहीं करना।
- भांग नहीं पीना।
- मद्यपान नहीं करना।
- मांस नहीं खाना।
- नीला वस्त्र व नील का त्याग करना।

प्रकाशक :
बिश्नोई सभा, हिसार

संपादक
डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई

सह संपादिका
श्रीमती अनिला बिश्नोई

कार्यालय पता :
'अमर ज्योति'
श्री बिश्नोई मन्दिर
हिसार - 125 001 (हरियाणा)
फोन : 8059027929
email: editor@amarjyotipatrika.com,
Website : www.amarjyotipatrika.com

सभा कार्यालय दूरभाष :
फोन : 01662-225804

इस पत्रिका में उल्लेखित सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ है।

सदस्यता शुल्क :
वार्षिक : ₹ 100
25 वर्ष : ₹ 1000

"अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें"

'अमर ज्योति' का ज्ञान दीप अपने घर आँगन में जलाइये।

विषय अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सबद-63	4
सम्पादकीय	6
साखी	7
करुणा एवं अहिंसा के प्रबल पक्षधर- गुरु जाम्भोजी	8
परम्पराओं का आधुनिकीकरण और गुरु जाम्भोजी	13
जाम्भाणी साहित्य में लोक- संस्कृति का चित्रण	16
प्रथम गुरु- माँ	19
किसान : दशा और दिशा	20
बधाई सन्देश	21
जांभाणी हरजस: वील्होजी कृत हरजस राग भैरूं व आसा	22
लोक साहित्य: बिश्नोई लोकगीत	23
बाल कविताएँ	24
कैरियर: शान से हो शानदार कमाई तो क्या कहना	25
दुर्लभ मनुष्य तन	26
पर्यावरणं रक्षन्तु: पर्यावरण संरक्षण और टिकाऊ विकास	27
जम्भवाणी में युगबोध	30
जम्भवाणी की शिक्षा	32
आस्था और श्रद्धा का अनोखा संगम: तीर्थ सरोवर जाम्भा का मेला सम्पन्न	33
गुरु जम्भेश्वर मंदिर, आदमपुर व रतिया का शिलान्यास	35
गुरु जाम्भोजी के जयकारों के साथ सोनड़ी मेला आयोजित	36
चौ. च.सिं. ह.कृ.वि., हिसार में प्रवेश सूचना	37
परोपकार: सामूहिक प्रगति का आधार	38

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

सबद 63

दोहा

बिश्नोई पूरब का, बालद लादी ओड़।
परखंड भूमि को मतो, चाल गया चितौड़।
सांगै मांग्यो डाण तब, विश्नोई दे नांह।
झाली राणी यूं कह्यो, वीर कहो गुरु तांह।
विश्नोई दो आविया, सतगुरु के दरबार।
बात कही तब अर्ज कर, शब्द कह्यो तिण बार।

पूर्व दिशा के कन्नौज कालपी के बिश्नोई ने व्यापार करने के लिये बैलगाड़ियों पर बहुमूल्य सामान लाद करके चितौड़ पहुंचे। वहां पर चितौड़ की सीमा में प्रवेश करते ही उनसे राज कर्मचारियों ने कर-डांण मांगा। तब बिश्नोइयों ने कहा कि हम जाम्भोजी के शिष्य हैं। हमारा डाण (टैक्स) बीकानेर, जोधपुर आदि अनेक राज्यों में माफ है। इसलिये आपको भी कर नहीं देंगे। वाद-विवाद बढ़ चुका था। तब बिश्नोई स्वयं ही चितौड़ के राजा व उनकी माता झाली राणी के सामने उपस्थित हुए। झालीराणी ने दयावश उन्हें माफ करवा दिया तथा अपने विश्वास पात्र सेवकों को जाम्भोजी के पास सम्भराथल भेजा। इस बात का पता लगाने के लिये कि वास्तव में जाम्भोजी कोई अवतारी पुरुष है या पाखण्डी ही है। ये लोग बिश्नोइयों सहित सम्भराथल पहुंचे और उन्होंने कहा कि आप अवतारी पुरुष होकर भी यहां पर विकट स्थान में निवास करते हो तथा अवतारी पुरुष राम कृष्ण के तो अयोध्या द्वारिका जैसे दिव्य भवन, रानियां और अन्य चकाचौंध थी किन्तु यहां पर तो ऐसा कुछ भी नहीं दिखाई देता, तब श्री जम्भेश्वर जी ने शब्दोच्चारण किया।

सबद-63

ओ३म् आतर पातर राही रूक्मण, मेल्हा मन्दिर भोयों।
गढ़ सोवनां तेपण मेल्हा, रहा छड़ा सी जोयो।

भावार्थ- हे सेवक गणों! यह कहना सत्य ही है कि द्वापर में कृष्ण अवतार के समय तो ऐसा ही था। उस समय तो अनेकानेक दास दासियों से घिरी हुई पवित्रा सौम्या रानी रूक्मणी थी। जो सदा ही सेवा में संलग्न रहा करती थी और द्वारिका में बड़े-बड़े महल मनभावन थे। वह स्वर्णमय दिव्य द्वारिका रानी रूक्मणी सभी कुछ वहीं छूट गये। अब मैं यहां अकेले जैसा ही हूँ, हालांकि यदा कदा कुछ लोग समीपस्थ रहते भी है किन्तु फिर भी मैं अकेला ही हूँ।

रात पड़न्ता पाला भी जाग्या, दिवस तपंता सूरूं।
उन्हां ठंडा पवना भी जाग्या, घन बरशंता नीरूं।

यह भी कटु सत्य है कि इस देश में रात्रि पड़ते ही सर्दी प्रारम्भ हो जाती है। यह मरुभूमि की विशेषता है तथा कभी गर्मियों में भयंकर लू चलती है तथा सर्दियों में ठण्डी-बर्फीली हवाएँ चलती हैं और वर्षा ऋतु में कभी भयंकर वर्षा तो कभी सूखा पड़ जाता है। जो भी ऋतु बदलती है वह वहीं पूर्ण रूपेण अपना प्रभाव जमाती है। इस बदलते हुए वातावरण को इस हरि कंकेहड़ी के नीचे व्यतीत करना पड़ता है।

दुनी तंणा औचाट भी जाग्या, के के नुगरा देता गाल गहीरूं।

तथा इतने कष्टमय वातावरण में मैं निवास करता हूं फिर भी यहां के लोग मेरे पास में अपना दु:ख-दर्द लेकर आते हैं। अनेकों प्रकार की कष्टमय व्यथा कथा मुझे सुनाते हैं। उनके कष्टों का निवारण मुझे करना पड़ता है तथा कुछ नुगरे लोग मुझे बहुत ही भद्दी गहरी गालियाँ देते हैं। उनकी वे गालियां भी मुझे सुननी पड़ती है।

जिहिं तन ऊंना ओढ़ण ओढ़ा, तिहिं ओढ़ंता चीरूं।
जां हाथे जप माली जपां, तहां जपंता हीरूं।

मैंने इस शरीर पर जो यह ऊन का भगवां वस्त्र ओढ़ रखा है कभी इसी शरीर पर मलमल के दिव्य वस्त्र ओढ़ा करता था तथा इस समय मैंने जो हाथ में काष्ठ की माला ले रखी है, कभी जप करने के लिये इन्हीं हाथों में हीरों की माला रहा करती थी।

बारा काजै पड़यो बिछोहो, संभल संभल झूरूं।
राघों सीता हनवत पाखो, कौन बंधावत धीरूं।

मुझे यहां मरूप्रदेश में इस सम्भराथल भूमि पर

अनेकानेक कष्टों का सामना इसलिये करना पड़ा क्योंकि प्रह्लाद के वचनों का पालन करते हुए इक्कीस करोड़ तो पार पहुंच गये तथा बारह करोड़ का उद्धार करना अब शेष था। वे लोग भाग्यवश इसी देश में यत्र-तत्र बिखरे हुए थे। इनकी खोज करके वापिस परमात्मा के लोक में पहुंचाना है। जब-जब भी मुझे वह प्रह्लाद वचन याद आता है तो मुझे भी दु:ख होता है कि अब तक मैं वचनों को निभा नहीं सका हूँ। इसलिये यहां पर डटा हुआ हूँ।

राम को भी वनवास काल में अति कष्टों का सामना करना पड़ा था। उस समय भी रावणादि राक्षसों को मारने का प्रयोजन था। उस समय तो राम के साथ में लक्ष्मण सीता के अतिरिक्त हनुमान जैसा स्वामी सेवक महावीर साथ में था। जब कभी अयोध्या की याद आती, कष्टों का अनुभव होता, तो ये लोग धैर्य बंधाया करते थे। किन्तु यहां पर तो मुझे धैर्य बंधाने वाला कोई नहीं है क्योंकि धैर्य ही दुख को निवृत्त करता है।

मागर मणिया काच कथिरूं, हीरस हीरा हीरूं।
विखा पड़ता पड़ता आया, पूरस पूरा पूरूं।

ऊपर से देखने में तो मगरे की कंकरीली भूमि में मिलने वाले पत्थर के मनके, कांच के मनके, मणिया, कथीर आदि के गहने हीरे जैसे ही लगते हैं। किन्तु जब विवेकी पुरुष द्वारा परीक्षा की जाती है तो भेद खुल जाता है। हीरा तो हीरा ही रहता है और काच पत्थर के नकली हीरे अलग हो जाते हैं। उसी प्रकार से जब तक आदमी को कष्ट की परीक्षा नहीं आती तब तक पूर्ण पुरुष या अधूरे पुरुष का पता नहीं चलता। इसलिये वियोग तो सृष्टि के आदि काल से ही होता आया है। लेकिन विछोह दु:ख से जो भी दुखित न हो वही पूरा पुरुष है।

जे रिण राहे सूर गहीजै, तो सूरस सूरां सूरूं।
दुखियां है जे सुखियां होयसै, करसै राज गहीरूं।

यदि अपनी शूरवीरता दिखानी है तो घर में बैठकर नहीं दिखाई जा सकती। उसे शूरवीरता दिखाने के लिये रण भूमि में ही जाना होगा तथा वहीं जाकर यदि आप अन्य शूरवीरों द्वारा सराहनीय होंगे तभी वह सच्चा शूरवीर है। उसी प्रकार से धर्मवीर, कर्मवीर, धैर्यवान व्यक्ति की परीक्षा भी तो संकट की घड़ी में ही हो सकती है। जो वर्तमान काल में सत्य धर्म का पालन करते हुए दु:खी दिखाई दे रहे हैं। वे कभी सुखी होंगे, इन्हें धर्म का फल मिलेगा। आज जो कंगाल है वे कभी सम्राट होंगे बहुत काल तक अकंटक राज्य करेंगे, प्रकृति का ऐसा ही नियम है।

महा अंगीठी बिरखा ओल्हो, जेठ न ठंडा नीरूं।
पलंग न पोढ़ण सेज न सोवण, कंठ रूलंता हीरूं।

कभी गर्मी ऋतु आती है तो कभी महान अंगीठी की तरह यह जगत संतप्त हो जाता है। वर्षा ऋतु में भयंकर वर्षा तथा ओले पड़ जाते हैं और ज्येष्ठ के महीने में ठण्डा जल भी नहीं मिलता, जबकि वर्षा, सर्दी में ठण्डे ओले पड़ जाते हैं। यही यहाँ मरुभूमि में होता है। इसे हम सभी सहन करते हैं। न तो यहाँ पर बैठने के लिये पलंग है और न ही सोने के लिये कोमल शय्या ही है और न ही गले में सुन्दर मोतियों की माला ही है। पहले ये सभी कुछ सुलभ थे।

इतना मोह न मानै शिम्भू, तही तही सूसीरूं।

इतना संयोग वियोग होने पर भी हमें इसमें कुछ भी मोह या द्वेष नहीं है। क्योंकि जैसा जहाँ पर सुसीर भाग्य होता है वहाँ हमें भी सुखों को छोड़कर विशेष कार्य के लिये निवास करना पड़ता है। राम अवतार के समय में भी यही सभी कुछ सहन करते हुऐ राक्षसों का विनाश किया था तथा अभी भी ऐसा ही करने के लिये यहाँ पर आये हैं।

घोड़ा चोली बाल गुदाई, श्री राम का भाई, गुरु की वाचा बहियों।
राघो सीता हनवंत पाखो दुख सुख कासूं कहियों।

समय परिवर्तनशील है। कभी बाल्यावस्था में राम का भाई लक्ष्मण घोड़ों को दौड़ाया करता था तथा अन्य भी बाल्य विशेष खेल कूदना, दौड़ना आदि साथ में ही किया करते थे किन्तु समयानुसार परिवर्तन आया और राम को वनवास हुआ। तब लक्ष्मण ने वे सभी बाल क्रिड़ाओं को छोड़कर भाई राम का साथ दिया तथा राम को ही परम गुरु मानकर उनके वचनों पर चला। लक्ष्मण सीता तथा हनुमान ने सदा ही सुख-दु:ख में राम का साथ दिया धैर्य बंधाया। उनके बिना राम अकेले को वनवास काटना दूभर हो जाता। गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि यहाँ मेरे पास में तो कोई नहीं है जो धैर्य बंधा सके सुख-दु:ख की बात मैं उनसे कह सकूं।

इस प्रकार से झाली राणी के विश्वसनीय सेवकों को यह सबद सुनाया। यही सबद रूपी भेंट तथा झारी, माला और सुलझावणी देकर उन्हें विदा किया। झालीराणी ने ये वस्तुएँ सहर्ष स्वीकार की तथा जम्भेश्वर जी के दर्शन की लालसा से जीवन व्यतीत करने लगी। कुछ समय पश्चात् श्री देवजी ने चितौड़ जाकर झाली को दर्शन दिया। सांगा राणा एवं झाली को शिष्य बनाया और उन बिश्नोइयों को सांगा राणा की प्रार्थना पर वहीं चितौड़ के राज्य में बसाया जो अब भी पुर, दरीबा, संभेलिया आदि गांवों में बिश्नोई बसते हैं।

– साभार 'जंभसागर'

सम्पादकीय

अब विद्या मंदिरों का निर्माण हो

भर्तृहरि ने कहा है–

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्,
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरुणां गुरुः॥
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतम्,
विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं विद्याविहीनः पशुः॥

अर्थात् विद्या मनुष्य का विशिष्ट रूप है, गुप्त धन है। वह भोग देनेवाली, यशदात्री और सुखकारक है। विद्या गुरुओं का गुरु है, विदेश में वह मनुष्य की बंधु है। विद्या बड़ी देवता है, राजाओं में विद्या की पूजा होती है, धन की नहीं। इसलिए विद्याविहीन पशु ही है।

वर्तमान ज्ञान–विज्ञान व प्रतिस्पर्धा के युग में आचार्य भर्तृहरि का कथन और अधिक प्रासंगिक हो गया है। मनुष्य जन्म तो हमें पूर्व संचित कर्मों के आधार पर मिल जाता है परन्तु इसका महत्त्व शिक्षा से ही बढ़ता है। शिक्षा एक ओर जहां तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में निपुणता प्रदान करती है वहीं मनुष्य में अच्छे संस्कारों का पोषण करती है। शिक्षा से जहां मानसिक विकास होता है वहीं मनुष्य का आत्मविश्वास भी बढ़ता है। बिना अच्छी शिक्षा के मनुष्य का सर्वांगीण विकास एक निर्मूल कल्पना है। बौद्धिक रूप से मजबूत व्यक्ति ही समाज के लिए उपयोगी हो सकता है। सब प्रकार की सफलताओं की कुंजी का नाम 'शिक्षा' है। यह एक धन है जिसे न कोई लूट सकता है और न ही बंटा सकता है। वस्तुतः शिक्षा मनुष्य और मनुष्यता का शृंगार है।

वर्तमान समय संस्थान आधारित शिक्षा का है, इसलिए शिक्षण संस्थानों की स्थापना करना एक सच्ची समाज सेवा है। विद्यालय रूपी तीर्थ धाम की मंदिर रूपी कक्षाओं में मानव व मानवता का भाग्य गढ़ा जा सकता है। आध्यात्मिक, भौतिक व सामाजिक तीनों का समन्वयात्मक विकास विद्यालय रूपी मन्दिर में ही संभव है। इतिहास साक्षी है कि वही राष्ट्र व समाज समृद्धता को प्राप्त हुआ है जिसने शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया है। वर्तमान में पूजा के मन्दिरों की ओर समाज का आकर्षण जितना अधिक बढ़ा हुआ है, वहीं विद्या के मन्दिरों की ओर उतनी ही उदासीनता है, जो कि चिन्ता का विषय है। गुरु जम्भेश्वर जी ने विष्णु के जप और यज्ञ आदि पर ही अधिक बल दिया था, जिससे स्पष्ट है कि मन्दिरों का अत्यधिक प्रचलन हमारी संस्कृति का अंग नहीं हैं।

पूजा स्थल के रूप में मन्दिरों का निर्माण और उस पर होने वाला व्यय एक सीमा तक ही उचित कहा जा सकता है, परन्तु वर्तमान में यह कार्य प्रतिस्पर्धा के रूप में चल रहा है। एक ही गांव या कस्बे में एक पूजा स्थल के होते हुए भी दूसरा मन्दिर, वह भी पहले वाले से अधिक भव्य व व्यय वाला बनाने की होड़ चली हुई है। इसे हम कोई स्वस्थ परम्परा नहीं कह सकते। यदि यही पैसा शिक्षण संस्थान, छात्रावास या कोचिंग सैंटर बनाने में लगाया जाए तो समाज के लिए अधिक उपयोगी होगा। आज शिक्षण संस्थानों की कोई कमी नहीं है फिर भी स्तरीय शिक्षा इतनी महंगी हो गई है कि आम व्यक्ति की पहुंच से बाहर है। ऐसे में समाज द्वारा शिक्षण संस्थानों की स्थापना करके जरूरतमंद लोगों को स्तरीय शिक्षा कम मूल्य पर उपलब्ध कराना युग सापेक्ष कार्य होगा।

आज वैश्वीकरण व प्रतिस्पर्धा का युग है। सभी समाज शिक्षा के प्रचार–प्रसार को लेकर अत्यन्त गंभीर दिखाई दे रहे हैं। उदाहरण के रूप में हम सिख व आर्य समाज को देख सकते हैं जिनके पास आज विश्वविद्यालय से लेकर तकनीकी शिक्षा के उच्च स्तरीय शिक्षण संस्थान मौजूद हैं। दोनों ही समाजों द्वारा संचालित शिक्षण संस्थानों की संख्या हजारों में है। शिक्षण संस्थान से न केवल शिक्षा में वृद्धि होती है अपितु इससे रोजगार भी पैदा होता है। अब समय है कि समाज युग की मांग को समझे व पूजा के मन्दिरों के साथ–साथ विद्या के मन्दिरों का भी निर्माण करे। सामाजिक संस्थाओं को भी इस विषय में अपना दायित्व समझना चाहिए और आगे आकर शिक्षण संस्थानों की स्थापना कर समाज के सर्वांगीण विकास के द्वार खोलने चाहिए।

साखी

कवि केशो जी कृत साखी

आवो मिलो जुमलै जुलो, सिंवरो सिरजणहार।1।
सतगुरू सतपन्थ चालिया, खरतर खण्डाधार।2।
जम्भेश्वर जिभिया जपो, भीतर छोड़ विकार।3।
सम्पति सिरजणहार की, विधिसूं सुणो विचार।4।
अवसर ढ़ील न कीजिये, भले न लाभे वार।5।
जमराजा वासे वह, तलबी कियो तैयार।6।
चहरी वस्तु न चाखिये, उर पर तज अहंकार।7।
बाड़े हूंता बीछड़ा जांरी, सतगुरू करसी सार।8।
सेरी सिवरण प्राणियां, अन्तर बड़ो अधार।9।
पर निन्दा पापां सीरे, भूल उठावै भार।10।
परलै होसी पाप सूं, मूरख सहसी भार।11।
पाछै ही पछतावसी, पापां तणी पहार।12।
ओगण गारो आदमी, इला रै उर भार।13।
कह केशो करणी करो, पावो मोक्ष द्वार।14।

भावार्थ-जन साधारण को सम्बोधित करते हुए केशोजी कह रहे है कि आओ मिलकर जुमले में बैठो और ज्ञान श्रवण करो तथा सिरजनहार भगवान विष्णु का स्मरण करो।1। सतगुरु जाम्भोजी ने यह बिश्नोई सतपंथ चलाया है। इस मार्ग पर चलो तो अवश्य ही मोक्ष की प्राप्ति हो जायेगी किन्तु इस पंथ पर चलना कठिन अवश्य ही है। जिस प्रकार तलवार की धार पर चलना कष्ट साध्य है उसी प्रकार इस पंथ पर चलना भी है। कहा भी है-'क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्या' धर्म के मार्ग पर चलना तो छुरे की धार पर चलना है। प्रारम्भ में कठिनता तो होगी तो उसका फल बड़ा ही मधुर होगा इसलिये कठिन होते हुए भी त्याज्य नहीं है किन्तु ग्राह्य है।2। जम्भेश्वर भगवान विष्णु का जप जिभ्या द्वारा जपो ''यज्जपस्तदर्थ भावनम्'' जप के साथ ही जिसका जप किया जाता है उसका ध्यान भी करना चाहिये, तभी वह जप कहलाता है। भीतर के विकार काम-क्रोधादि का त्याग करे तभी जप सफल होगा।13। यह धन दौलत की संपति जिसे अपना मान रखा है वास्तव में यह सिरजनहार भगवान विष्णु की ही है। उन्होंने ही प्रदान की है उन्हीं की ही निजी संपति है। हम क्यों व्यर्थ में ही झूठे मालिक बनकर अभिमान करें। यह बात विचार करने योग्य है।4। यह मानव जीवन एक अवसर मिला है कुछ करने के लिये, बन्धन से छूटने के लिये, यदि इस बार भी ढील दे दी गयी तो फिर बार-बार यह मानव देह रूपी अवसर नहीं मिलेगा।5। यमराज वहां से अपने स्थान से तुम्हें लेने के लिये चल पड़े हैं। पीछे तलब, हिसाब-किताब लेने वाले अपने चित्रगुप्त को तैयार करके आ रहे हैं वहां तो किसी प्रकार की ढील नहीं है किन्तु तुम्हारी तरफ से ढील चल रही है। तुम जाने के लिये अब तक तैयार नहीं हुए हो अर्थात् मृत्यु सदा ही ले जाने के लिये तैयार खड़ी है, जब भी अवसर मिलेगा तभी ले जायेगी। इसलिये इस जीवन का विश्वास करना ही बहुत बड़ा धोखा है।6।

चहरी अखाद्य वस्तु जैसे मांस, मदिरा आदि एवं अपवित्र भोजन जलादि ग्रहण नहीं करना चाहिये। उसे तो हृदय से घृणा करके परित्याग देना ही ठीक है। अन्यथा मन बुद्धि शरीर सभी को नष्ट कर देगा।7। प्रह्लाद के बाड़े के बिछुड़े हुए जीवों की सतगुरु अवश्य ही सहायता करेंगे, तुम्हें गुरुदेव के जुमलै में सम्मिलित होने की आवश्यकता है। हे प्राणी! तूं मानव देह में आया है। इस देह को प्राप्त करके भगवान विष्णु का स्मरण मनसा, वाचा, कर्मणा द्वारा करें। यदि इस देह के द्वारा परमात्मा को याद नहीं किया और यह शरीर जर्जरित होकर नष्ट हो गया तो फिर आगे तेरी क्या दशा होगी? इस जीवात्मा को बैठने के लिये कोई शरीर तो चाहिये वह तो तुझे यह मानव देह का तो नहीं मिलेगा। इससे तो तूं बहुत ही दूर चला जायेगा। अन्य भले ही निकृष्ट योनि का शरीर मिले।9। परायी निन्दा करना शिरोमणी पाप है। इसलिये जो भी पराई निंदा, अनहोनी बात जो किसी को नीचा दिखाये, ऐसी वार्ता करके अपने आपको महान सिद्ध करता है तो वह समझो दुनियां के पाप का भार अपने कन्धे पर उठाये हुए कितने दिनों तक चलेगा। एक दिन प्रलय को प्राप्त हो जायेगा। मृत्यु का ग्रास बन जायेगा। तब मूर्ख यमदूतों की मार सहन करेगा।11। पीछे बहुत ही पछतायेगा, अपने कुकर्मों के लिये रोयेगा किन्तु फिर क्या हो सकता है। समय बीत जाने पर फिर पीछे पछतावा ही तो रहता है।12। अवगुणों से भरा हुआ आदमी इस धरती पर भार है। यह धरती, वृक्ष, पहाड़, नदी, नाले, पशु, पक्षी से भार नहीं मरती किन्तु दुष्ट पापी के भार से दब जाती है। तभी भार उतारने के लिये स्वयं विष्णु ही सम्भराथल पर आये है।13। कवि केशोजी कहते हैं कि कर्त्तव्य कर्म करोगे तो मुक्ति का द्वार खुलेगा अन्यथा तो दु:ख नरक का द्वार तो खुला ही पड़ा है।14।

- साभार साखी भावार्थ प्रकाश

करुणा एवं अहिंसा के प्रबल पक्षधर - गुरु जाम्भोजी

मेतिंयूएसु कप्पए

अर्थात् सभी जीवों के प्रति मैत्री भाव का आचरण करें।

-उत्तराध्ययन (6/1)

"करुणा/दया से लबालब भरा हुआ दिल ही सबसे बड़ी दौलत है, क्योंकि दुनियादारी दौलत तो नीच आदमियों के पास भी देखी जा सकती है।" -तिरूवल्लुवर

"अहिंसा के समान अन्य कोई धर्म नहीं है।"

-भक्त परिज्ञा (91)

संसार के तमाम धर्म-ग्रन्थों पर यदि दृष्टि डाली जाये, तो यह स्पष्ट एवं ध्रुव-सत्य है कि कोई भी पुनित धर्म-ग्रन्थ करुणा एवं अहिंसा के भावों से परे नहीं है। सभी धर्मों एवं धर्म-ग्रन्थों की विषयवस्तु प्राणी मात्र है और प्राणी मात्र के कल्याण की बात सभी की मूलभावना है, आधारशिला है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि हर युग में पशुबलि किसी न किसी रूप में प्रचलित रही है। मूक पशु-पक्षियों का वध तामसी वृत्तियों का शिकार रहा ही है लेकिन जब-जब भी ऐसी हिंसक वृत्तियां चरम पर रही है तब परमात्मा ने किसी न किसी रूप में इस धरा पर जन्म लेकर/अवतरित होकर, हिंसक/राक्षसी/असुरी वृत्तियों का नाश करके प्राणी मात्र को अभयदान दिया है, भयमुक्त किया है।

करुणा, जीवसहावस्स

अर्थात् करुणा जीव का स्वभाव है। -धवला (13/5)

सव्वे पाणा पियाउया, सुहसाया दुक्खपडिकूला
अप्पियवहा पियजीविषो जीविउकामा, सर्वेसिं
जीवियं पियं, नाइवाएज्ज कचणं।

-आचारंण (1/2/3/4)

अर्थात् प्राणीमात्र को अपनी जिन्दगी प्यारी है। सुख सबको प्रिय है और दु:ख अप्रिय। वध सबको अप्रिय है और जीवन प्रिय। सब प्राणी जीना चाहते हैं। कुछ भी हो, एक बात तो निश्चित है कि सब प्राणियों को अपना जीवन प्रिय है। इसलिए कोई किसी भी प्राणी की हिंसा न करे।

एकेन्द्रिय जीवों से पंचेन्द्रिय प्राणियों तक की सम्पूर्ण योनियों के जीव जीना चाहते हैं। भगवान महावीर का 'जीयो और जीने दो' का सिद्धान्त इसी बात का प्रबल पक्षधर है। कहा भी गया है कि जब आप किसी को जीवन दे नहीं सकते, तो आपको किसी का जीवन लेने का अधिकार भी नहीं है।

करुणा एवं अहिंसा जैसे अर्थप्रधान गूढ़ शब्दों को थोड़ा विस्तार से समझना विषयवस्तु की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है।

बुद्ध और महावीर- करुणा और अहिंसा, इन दोनों अवतारों के साथ ये दोनों शब्द जुड़े हुए हैं। जीवों के मंगल और कल्याण के लिए- करुणा और अहिंसा का आंतरिक संस्कार होना अनिवार्य है। 'बुद्ध की करुणा और महावीर की अहिंसा' आलेख में रामकिशोर सिंह 'विरागी' ने लिखा है कि "अध्यात्म के नाम पर बढ़ रहे अपराधों एवं हिंसा के पीछे मूल कारण है आंतरिक शुद्धि का अभाव। अंत:करण के परिष्कार एवं परिमार्जन की प्रवृत्ति का न होना। इस प्रवृत्ति को उत्पन्न करने एवं बढ़ावा देने के लिए बुद्ध ने करुणा एवं महावीर ने अहिंसा पर बल दिया।" करुणा और अहिंसा कोई कर्मकाण्ड और अनुष्ठान नहीं है। बल्कि यह अंत:करण और हृदय से संबंध रखता है। अन्त:करण में रहकर वैसा ही आचरण करने का संकेत और निर्देश देता है जिससे आदमी (मानव) अपना कल्याण तो करता ही है, साथ ही समस्त जगत, जीव, प्राणी, लता, वृक्ष, वनस्पति, फूल, पत्तियों के लिए भी कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता रहता है। जगत के मंगल और कल्याण के मूल में करुणा और अहिंसा का संस्कार और व्यवहार ही है। जब करुणा का संस्कार (भाव) अन्त:करण में विद्यमान रहेगा तो 'अहिंसा' की ओर न तो कोई प्रेरित होगा, न ही अग्रसर होगा और न ही करेगा। 'करुणा' का संस्कार (भाव) अहिंसा के साथ जुड़ा है। जहां 'करुणा' रहेगी, वहां अहिंसा स्वत: ही होगी। 'करुणा' के विद्यमान रहने के कारण अहिंसा का वातावरण स्वत: निर्मित होता चला जाता है। करुणा, अहिंसा के लिए जरूरी है अनिवार्य है।

"अहिंसा के दो पहलू" आलेख में डॉ. सुरेश वर्मा के अनुसार महावीर ने सदा अहिंसा को सर्वोपरि माना और इसी दृष्टि से पशु-पक्षी, जीव-जन्तु और सूक्ष्म जीवों को जीवनदान देना भी कहा है। सच तो यह है कि जैन धर्म की

मुख्य शिक्षा है 'अहिंसा' इसलिए जैन संतों ने इसे परम-धर्म की संज्ञा दी है। गौतम बुद्ध और भगवान् महावीर स्वामी ने जो कुछ अपनी- अपनी तपस्याओं से प्राप्त किया, वही अपने साधकों को सहर्ष प्रदान किया, जिसका तत्व था, अहिंसा, अहिंसा और अहिंसा। दोनों ही संतों ने अपने-अपने साधकों से कहा- 'हिंसा को सदा दूर रखो बल्कि यहां तक कहा कि शस्त्रों से भी दूर रहो और शस्त्रों का निर्माण भी न होने दो।

महावीर की भाषा में हिंसा का अर्थ है-'असंयम', अहिंसा का अर्थ है संयम। हिंसा का अर्थ है 'प्रमाद', अहिंसा का अर्थ है 'अप्रमाद'। जब संयम ही अहिंसा है, अप्रमाद ही अहिंसा है तब कौन-सी मानसिक हिंसा बचती है, कौन-सी वैचारिक हिंसा बचती है और कौन-सा बुरा भाव बचता है।

बौद्ध धर्म में अहिंसा को परमधर्म माना गया है जीव, जीव की हत्या करे, यह वृत्तिकारात्मक कही गई है। अहिंसक व्यक्ति अधिक शक्तिशाली माना गया है। हिंसा चाहे जहां चल रही हो पर अहिंसा ने सदा ही उस पर शासन किया है। गौतम बुद्ध ने कहा- सबसे प्रेम करो, सबको प्यार करो। प्रेम तो हृदय की पुकार है। बसंत की बहार है। पक्षियों का मधुर कलरव है। प्रेम तो आत्मा की कसक है जो हर धर्म, हर सम्प्रदाय और हर आत्मा में बसता है।

हिंसा का एक कारण गौतम बुद्ध ने तृष्णा को माना है। मनुष्य में तृष्णा का वेग इतना गहरा होता है कि वह हिंसा करने से भी नहीं चूकता। तृष्णा का अन्त आवश्यक है और इसे जब तक समाप्त नहीं किया जाता-हिंसा होती रहेगी। बुद्ध का कहना था-'हमारे अन्दर की तृष्णा ही दु:ख है। किसने बनाया इस शरीर को? जिसने बनाया उसी ने तो दु:ख भर दिया इस काया में। इसी काया सुख के लिए जन्मों तक भटका, पर आज समझा कि यही तो मेरी तृष्णा है। यही तृष्णा मनुष्य को बहाये लिये जा रही है। इसी तृष्णा के कारण मनुष्य जन्म लेता है, लड़ते-मरते हैं और फिर दु:ख के सागर में डूब जाते हैं। ओ तृष्णा! आज से तू निरस्त हुई।'

बौद्ध धर्म के दस शीलों में पहला शील ही था-हिंसा न करना। अहिंसा का मार्ग अपनाना।इसके अन्तर्गत ही गौतम बुद्ध ने ब्राह्मणों द्वारा दी गई बलि का भी विरोध किया। चोरी न करना और झूठ न बोलना। भिक्षु होने के उपरान्त अपने भिक्षुओं को पूर्ण अहिंसा पर अटल रहने का मंत्र दिया। गौतम बुद्ध ने अपने शिष्यों को समझाया- घृणा कभी भी घृणा करने से समाप्त नहीं होती। घृणा प्रीति से समाप्त होती है और यही उसका स्वभाव भी है।

संत तिवायए पाणे अदुवा अण्णेहिं घायए।
हवंतं वाऽणुजाणाइ वेरं वड्ढेति अप्पणो।।

-सूत्रहकृतांग (1/1/3)

अर्थात् जो व्यक्ति स्वयं किसी प्रकार से प्राणियों का वध करता है अथवा दूसरों से वध कराता है या प्राणियों का वध करते हुए अन्य व्यक्तियों का अनुमोदन करता है, वह संसार में अपने लिए वैर बढ़ाता है।

जगनिस्सिएहिं भूएहिं, तसनामेहिं थावरेहिं च।
नो तेसिमारभे दंडं, मणसा वयसा कायसा चेव।।

-उत्तराध्ययन (8/10)

अर्थात् जगत के आश्रित जो त्रस और स्थावर प्राणी हैं, उनके प्रति मन, वचन और काया, किसी भी प्रकार से दण्ड का प्रयोग न करें।

साव्वओवि नईओ, कमेण जह सायरमि निवंडति।
तह भगवई अहिंसा, सव्वे धम्मा समिल्लं ति।।

-संबोधसत्तरी (6)

अर्थात् जिस तरह सभी नदियां अनुक्रम से समुद्र में आकर मिलती है, उसी तरह महाभगवती अहिंसा में सभी धर्मों का समावेश होता है।

अहिंसा निउणा विट्ठा, सव्व यूएसू संजमो।

-दशवैकालिक (6/9)

अर्थात् सभी प्राणियों के प्रति स्वयं को सयंत रखना, यही अहिंसा का पूर्ण दर्शन है।

इसी प्रकार विभिन्न महापुरुषों द्वारा समय-समय पर करुणा एवं अहिंसा को परिभाषित करने हेतु कहे गये कुछ अनमोल वचनों को विषय की सार्थकता को सम्पुष्ट करने के लिए उद्धृत करना उचित प्रतीत होता है।

'करुणा में शीतल अग्नि होती है जो क्रूर से क्रूर व्यक्ति का हृदय भी आद्र कर देती है। अहिंसा भय का नाम नहीं जानती है।' -महात्मा गांधी

'जीव मात्र की अहिंसा स्वर्ग को देने वाली है।'

-शंकराचार्य

'हिंसा को आप यदि सर्वाधिक शक्ति सम्पन्न मानते हैं तो मानें, पर एक बात निश्चित है कि हिंसा का आश्रय

लेने पर बलवान व्यक्ति भी सदा 'भय' से प्रताड़ित रहता है।' –स्वामी विवेकानंद

इस प्रकार यह स्पष्ट रुप से कहा जा सकता है कि बुद्ध की करुणा और महावीर की अहिंसा सभी धर्मों, धर्मग्रंथों, साधु-संतों, महापुरुषों एवं हिंसा के विरुद्ध जन-जागरण करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए जीवन का आधार रही है और उसी के द्वारा विश्वशांति एवं सौहार्द की संकल्पना को साकार रूप में देखा जा सकता है।

"जम्भसागर ग्रंथ" (पृ. 4 व 5) के टीकाकार श्री कृष्णानंद आचार्य के अनुसार 15-16वीं शताब्दी का सन्धी काल भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग रहा है। उस समय में अनेकों महापुरुष अवतरित हुए, जिनके दिव्य ज्ञानोपदेश से नयी चेतना भारतीय जन मानस में आयी। अत: इस काल को संत युग भी कहा जा सकता है। इसी संत युग में भगवान विष्णु ने ही श्री गुरु जम्भेश्वर के रूप में अवतार लिया जो वि.सं. 1508 भादो बदि अष्टमी को अर्धरात्रि में ग्राम पींपासर (जिला नागौर राज.) के ठाकुर लोहट जी की भक्ति से द्रवित होकर उनके घर में दिव्य तेजोमय बालक के रूप में प्रकट हुए। श्री गुरु जाम्भोजी महाराज का स्वरूप तेजोमय ज्योति स्वरूप था। अत: आजीवन सांसारिक कार्य करते हुए भी निरहारी थे। प्रकृति के अधीन नहीं थे "महापण को आधारूं"। श्री गुरु जम्भेश्वरजी ने अवतार लेकर जन कल्याण के लिये मानवता का परिष्कृत संविधान मानव मात्र के सामने रखा जो कि युक्ति मुक्ति का अमूल्य खजाना है। सत्ताइस वर्ष गो सेवा में व्यतीत किये। श्री गुरु महाराज ने अपने इस काल में अनेकों सबद कहे थे। सबदवाणी एवं उनतीस नियम सभी वेद शास्त्रों का सार होते हुए आज भी समसामयिक है। श्री गुरु महाराज का उपदेश आज से पांच शताब्दी पूर्व उपयोगी था वैसा ही वर्तमान समय में भी उपयोगी सिद्ध हो रहा है।

"बिश्नोई पंथ और साहित्य" पुस्तक (पृ. 16 व 17) के लेखक डॉ. बनवारीलाल सहू के अनुसार बिश्नोई पंथ में सबसे अधिक महत्त्व उनतीस नियमों का है। ये नियम बिश्नोई समाज की पहचान के आधार हैं। गुरु जाम्भोजी ने बिश्नोई पंथ की स्थापना के समय इन नियमों का उपदेश समाज के लोगों को दिया था। वस्तुत: ये नियम बिश्नोई पंथ की आचार संहिता है। ये नियम न केवल बिश्नोई पंथ के लिये उपयोगी हैं अपितु पूरे मानव समाज के लिये उपयोगी हैं।

तेज पुंज विष्णु स्वरूपा गुरु जाम्भोजी के मुखारविन्द से उच्चारित सबद-सूत्र सार की विषयवस्तु पर यदि नजर डालें तो हम पायेंगे कि आज से पांच शताब्दी पूर्व गुरुवर जाम्भोजी महाराज के विरल व्यक्तित्व एवं कृतित्व में भगवान बुद्ध की करुणा एवं भगवान महावीर स्वामी की अहिंसा स्पष्टरूप से परिलक्षित होती है। उनके द्वारा प्रतिपादित उनतीस नियम जो कि आज सम्पूर्ण मानव जाति के लिए हितोपदेश है, कल्याणकारी है। इन्हीं नियमों में 11,14,18 व 19 में करुणा, दया एवं सत्य और अहिंसा पर विशेष बल दिया गया है।

ऊदोजी नैण, बिश्नोई पंथ के प्रसिद्ध कवि माने जाते हैं, उन्होंने उन उनतीस नियमों को पद्य रूप में लिखा, जिसमें जाम्भोजी गुरुदेव की जीव दया को दर्शाते हुए उन्होंने कहा कि-

'जीव दया पालणी, रूंख लीला नहिं घावै'।
अजर जरै, जीवत मरै, वे वास बैकुण्ठा पावै॥

गुरु जाम्भोजी ने अपनी सबदवाणी में प्राणीमात्र के प्रति दया, करुणा एवं अहिंसा का प्रबल भाव रखते हुए जम्भसागर ग्रंथ में सबद 20 (पृ. 58) में कहा है कि-

जां जां दया न धर्मूं, तां तां बिकरम कर्मूं।

अर्थात् जहां पर जिस देश, काल या व्यक्ति में दया भाव जनित धर्म नहीं है वहां सदा ही धर्म विरुद्ध पापमय ही कर्म होंगे। दयाभाव, नम्रता, शीलता, धार्मिकता ये मानव के भूषण है। ये धारण करने से मानवता निखर करके सामने आती है। सबद 9 (पृ. 39) में कहा है कि-

बिन चीन्है खुदाय बिबरजत, केहा मुसलमानों।

अर्थात् तुम लोगों ने ईश्वर को तो पहचाना नहीं है। उस खुदा ने भी तो जीव हत्या करना मना किया है फिर भी जीव हत्या करते हो, तो तुम सच्चे मुसलमान कैसे हो सकते हो? शिष्य यदि गुरु का कहना नहीं माने तो फिर कैसा गुरु और कैसा शिष्य।

जीवां ऊपर जोर करीजै, अंत काल होयसी भारूं।

अर्थात् इस समय यदि जीवों पर जोर जबरदस्ती करते हो तो अन्त समय में तुम्हारे लिये मुश्किल पैदा हो जायेगी। तुम्हारा यह जीवन मूल ही नष्ट हो जायेगा।

सुणरे काजी सुणरे मुल्ला, यामै कोण भया मुरदारूं।

अर्थात् रे काजी, रे मुल्ला! ध्यानपूर्वक सुनो! उसमें मुर्दा कौन हुआ? मारने वाला या मरने वाला? यहां तो ऐसा ही

लगता है कि मुर्दे को खाने वाला ही मुर्दा-मृत है। जो मर चुका है वह तो नया शरीर धारण कर ही लेगा, किन्तु मरे हुए को खाने वाला तो रोज मुर्दा-मृत होता है अर्थात् तुम लोग सभी मुर्दे हो। सबद 8 (पृ. 38) में लिखा है कि:-

किणरी थरपी छाली रोसो, किणरी गाडर गाई।

अर्थात् किस महापुरुष/पैगम्बर ने यह विधान बनाया है कि तुम काजी, मुल्ला मुसलमान या हिन्दु मिलकर या अलग-अलग इन बेचारी भेड़-बकरी और माता तुल्य गऊ के गले पर छुरी चलावो अर्थात् ऐसा विधान किसी ने नहीं बनाया, तुम मनमुखी हो तथा अपना दोष छिपाने के लिये किसी महापुरुष को बदनाम मत करो।

सूल चुभीजै करक दुहैली, तो है है जायों जीव न घाई।

अर्थात् यदि तुम्हारे शरीर में कांटा चुभ जाता है तो भी दर्द असह्य हो जाता है फिर बेचारे जन्मे जीव ये भी तो शरीर धारी है इनके गले पर छुरी चलाते हो, कितना कष्ट होता है? सभी प्राणी जीना चाहते हैं, मृत्यु भयंकर है, उस दु:खदायी अवस्था में इन मूक प्राणियों को आप पीड़ा पहुंचा देते हैं इससे बढ़कर और क्या कष्ट होगा, यही बड़े दु:ख की बात है।

थे तुरकी छुरकी भिस्ती दावों, खायबा खाज अखाजूं।

अर्थात् आप लोग मुसलमान हैं और हाथ में छुरी रखते हैं तथा अखाद्य मांस आदि का खाना खाते हैं फिर भी स्वर्ग में जाने का दावा करते हैं, यह असंभव है।

इसी प्रकार सबद 11 (पृ. 42) में गुरुदेव कहते हैं कि:-

आप खुदाय बंद लेखौ मांगै, रे वीन्है गुन्है जीव क्यूं मारो।

अर्थात् स्वयं खुदा न्यायकारी आपसे न्याय मांगेगा और पूछेगा कि रे प्राणी! तेरे को अमूल्य मानव जीवन दिया था। इस जीवन में तेने क्या कर्म किये? उन जीवों ने तेरा क्या अपराध किया था, जिससे तुमने उनको मार डाला। तुझे किसी भी प्राणी को मारने का हक नहीं है, यदि तूं किसी को जीवनदान नहीं दे सकता, तो मृत्युदण्ड देने का क्या हक है? यह अनाधिकार चेष्टा है।

थे तक जांणों तक पीड़ न जांणो, विन परचै वाद निवाज गुजारो।

अर्थात् आप लोग बल प्रयोग द्वारा प्राणियों को मारना तो जानते हो किन्तु उनकी पीड़ा को नहीं जानते अर्थात् आपके पास सहानुभूति नहीं है अपने जीवन में कभी किसी सद्गुरु की बात का विश्वास पूर्ण श्रवण नहीं किया जिससे आत्मज्ञान प्राप्ति के बिना ही व्यर्थ में ही विवाद करते हो इसी प्रकार से अज्ञानी रहकर ही नमाज अदा करते हो तो इससे जीवन में कुछ भी लाभ नहीं होगा।

चर फिर आवै सहज दुहावै, जिसका खीर हलाली।
तिसके गले करद क्यूं सारौ, थे पढ़ सुण रहिया खाली।

अर्थात् जो माता तुल्य गऊ वन में चरकर आती है और वापिस आकर स्वभाव से ही अमृत तुल्य दूध देती है। उससे तुम लोग खीर आदि बनाकर खाते-पीते हो, फिर ऐसी परोपकारी माता के गले पर करद का वार भी करते हो तो तुम लोग पढ़-लिख, सुनकर भी खाली रह गये। तुम्हारा पढ़ना-लिखना व्यर्थ ही सिद्ध हो गया।

इसी प्रकार सबद 75 (पृ. 172) में गुरुदेव यह फरमाते हैं कि:-

गऊ विणासों काहैं तानी, राम रजा क्यूं दीन्हीं दानीं
कान्ह चराई रनवे बानी, निरगुन रूप हमें पतियानी।

अर्थात् आप लोग मुहम्मद के शिष्य होकर फिर गऊवों का विनाश करते हो तो किस बल पर। आप लोगों को विपत्ति काल में कौन सहारा देगा। यदि गऊवों का विनाश ही करना होता तो राम ने दया क्यों दिखाई। उन्होंने भारत वासियों को गऊ पालन की शिक्षा क्यों दी तथा द्वापर में श्रीकृष्ण ने स्वयं गऊवें क्यों चराई। घर-बार का सुख-आराम छोड़कर वृंदावन में क्यों गऊवों के पीछे भटकते रहे। यदि गऊवों को मारना ही लक्ष्य होता तो फिर उन महापुरुषों ने इनको जीवित रखने के लिये इतने कष्ट क्यों उठाये।

जीव दया ही नहीं गुरुदेव ने पेड़-पौधों के रक्षण/संरक्षण हेतु भी सबद 7 (पृ. 35) में वृक्ष न काटने का भी संदेश दिया है:-

सोम अमावस आदितवारी, कांय काटी बन रायों।

अर्थात् आप लोग हिन्दू होकर भी चन्द्रमा के रहते, अमावस्या के समय तथा सूर्यदेव के समक्ष हरे वृक्षों को काटते हो तो तुम कैसे हिन्दू हो सकते हो? अर्थात् किसी भी समय हरे वृक्ष नहीं काटने चाहिये, ये जीव धारी होते हुए मानव आदि के लिए बहुत ही उपयोगी है। सम्पूर्ण समय में सोम-चन्द्रमा, अमावस तथा आदित्य-सूर्य ये तीनों उपस्थित रहेंगे ही। दिन में सूर्य रात्रि में चन्द्रमा तथा अन्धेरी रात्रि में अमावस्या रहेगी, इन तीनों के बिना तो समय की कल्पना

भी नहीं की जा सकती। इसलिए हरे वृक्ष नहीं काटने चाहिए। यह कार्य सदा ही वर्जनीय है।

उल्लेखनीय है कि पर्यावरण-प्रेमी गुरु जाम्भोजी ने "जीव दया पालणी" और "रूंख लीलो नहिं घावै" अर्थात् पृथ्वी के समस्त जीवों पर दया करो और हरे वृक्ष मत काटो का मूल मंत्र प्रदान किया। गुरु जाम्भोजी के बाद संत वील्होजी ने वृक्षों की रक्षा के लिये खूब प्रचार-प्रसार किया और कहा कि सिर देने से रूंख बचते है तो इसे सस्ता जानना चाहिये और इसी का परिणाम खेजड़ली में वृक्षों की रक्षा करते हुए 1787 में 363 नर-नारियों ने अपना बलिदान दे दिया। जो पर्यावरण एवं वन संरक्षण का विश्व में एकमात्र प्रेरणादायी उदाहरण है।

सार रूप में यह कहा जा सकता है कि भगवान बुद्ध की करुणा एवं भगवान महावीर की सत्य-अहिंसा को गुरुदेव जाम्भोजी ने आगे बढ़ाते हुए प्राणी मात्र के कल्याण की बात पुरजोर शब्दों में कही और आज भी वह देखने को मिल रही है। इस प्रकार विभिन्न संदर्भों के आधार पर यह बात पुष्ट हो जाती है कि गुरुदेव जाम्भोजी करुणा एवं अहिंसा के प्रबल पक्षधर थे।

-डॉ. बी. डी. तातेड़
वरिष्ठ व्याख्याता (से.नि.),
राजकीय पी.जी. कॉलेज, बाड़मेर
मो. 9413526640

पाठकों से अनुरोध है कि.....

- अमर ज्योति प्रत्येक मास की पहली तारीख को भेजी जाती है। यदि 15 तारीख तक आपको न मिले तो इसकी सूचना आप 01662-225804/8059027929 पर या पत्र, ई-मेल द्वारा दें ताकि आपको दूसरी प्रति भेजी जा सके। सूचना देते समय रसीद क्रम संख्या अवश्य बताएं।
- जिनकी सदस्यता मई, 2017 में पूरी हो रही है, वे अपनी सदस्यता का नवीनीकरण अवश्य करा लें।
- अमर ज्योति आपकी अपनी पत्रिका है, इसके प्रचार-प्रसार में सहयोग दें। अपने मित्रों, सम्बन्धियों एवं परिचितों को भी पत्रिका परिवार का सदस्य बनाएं ताकि वे भी इसके ज्ञानामृत का पान कर सकें।
- अमर जयोति बिश्नोई सभा, हिसार का समाज हितार्थ प्रकाशन है। सभा इसे महंगाई के युग में भी अत्यन्त कम मूल्य (लागत से भी कम) पर उपलब्ध करवा रही है। आप भी अपने खुशी के अवसरों (विवाह, जन्मदिन, नौकरी, पदोन्नति, व्यवसाय लाभ आदि) पर अपनी इस चहेती पत्रिका को सहयोग देना न भूलें।
- विवाह, जन्मदिन आदि अवसरों पर आप अपने प्रियजनों को अमर-ज्योति की आजीवन सदस्यता रूपी अनूठा उपहार देकर उनके हृदय में चिरस्थायी स्थाना बना सकते हैं।
- समय-समय पर अपने सुझावों व प्रतिक्रियाओं से हमारा मार्गदर्शन करते रहें।
- सदस्यता शुल्क व्यवस्थापक, अमर-ज्योति, बिश्नोई मंदिर, हिसार-125001, हरियाणा के पते पर मनीऑर्डर, चैक या ड्राफ्ट द्वारा भेजें।

- सम्पादक

परम्पराओं का आधुनिकीकरण और गुरु जाम्भोजी

उनतिस धर्म की आखड़ी, हिरदे धारियो जोय।
जाम्भोजी किरपा करी, नाम बिश्नोई होय॥

गुरु जाम्भोजी एक समाज सुधारक थे। उन्होंने सबदवाणी में अपना परिचय विष्णु के रूप में दिया है। सात वर्ष की अवस्था में इन्होंने सबदवाणी का प्रथम सबद कहा था और उसके बाद वे जीवन पर्यन्त लोगों को **'जीया नै जुगती अर् मूवां नै मुगती'** अर्थात् 'जीवन जीने की युक्ति और मोक्ष का मार्ग' का उपदेश देते रहे थे। सबदवाणी गुरु जाम्भोजी के विचारों को जानने का प्रामाणिक आधार है। इसमें उन्होंने जो विचार व्यक्त किये हैं, वे किसी वर्ग विशेष या जाति विशेष के लिए न होकर मानव मात्र के लिए हैं। इन्होंने लोक कल्याण के लिये बिश्नोई पंथ की स्थापना की, जिसके तहत उनतीस नियम हैं। इनमें जीवन जीने की कला एवं मोक्ष प्राप्ति का सहज रास्ता बताया गया है। गुरु जाम्भोजी ने उत्तम कर्म पर सर्वाधिक बल दिया है तथा हिन्दू और मुसलमान दोनों में प्रचलित पाखण्ड का खंडन किया है। इस पंथ ने समाज में प्रचलित बुराइयों को समाप्त कर ईमानदारी, अहिंसा और परोपकार आदि गुणों को स्थापित करने का प्रयास किया है।

इनका समय राजनीतिक दृष्टि से ऊहापोह का काल है। समाज में बाल विवाह और बहुविवाह प्रचलन में था। स्त्रियों की स्थिति अच्छी नहीं थी। स्त्री शिक्षा का भी अभाव था। बिश्नोई पंथ और साहित्य में बनवारी लाल साहू ने लिखा है कि- "इस काल में धार्मिक सम्प्रदायों और उप-सम्प्रदायों की संख्या लगातार बढ़ रही थी। धर्म के नाम पर अनेक आडम्बर एवं पाखंड फैले हुए थे। धर्म के रक्षक कहे जाने वाले लोग अशिक्षित जनता को आडम्बरों एवं पाखण्डों से गुमराह कर रहे थे। इन आडम्बरों एवं पाखण्डों से समाज में कलह तथा अशान्ति का वातावरण बना हुआ था। ऐसे वातावरण में धर्म का वास्तविक रूप नष्ट हो गया था।"

इस समय (सन् 1451-1536 ई.) लोग मुख्यत: खेती और पशु-पालन पर निर्भर थे। ये दोनों ही काम वर्षा पर आधारित थे। वर्षा के अभाव में यहाँ के लोगों को आये दिन अकाल और भुखमरी का सामना करना पड़ता था। ऐसी स्थिति में जाम्भोजी के सामने काफी जटिल सवाल थे। इन सवालों को उन्होंने अपने आस-पास के उदाहरणों से लोगों को समझाने का प्रयास जम्भवाणी से किया। जाम्भोजी की वाणी और उनकी वैचारिकी को समझने के लिए हम जम्भवाणी और उनके द्वारा बनाए गए उनतीस नियमों का सहारा लेंगे। जो आधुनिक के साथ वैज्ञानिक और व्यावहारिक भी हैं। इन पर विचार कुछ बिन्दुओं जैसे- पर्यावरण, अहिंसा, परोपकार के साथ उनकी क्रान्तिकारी भावना को ध्यान में रखकर किया जाएगा।

पर्यावरण के सन्दर्भ में वृक्षों तथा वन्य जीवों की रक्षा को लेकर एक अप्रतिम उदाहरण बिश्नोई पंथ के लोगों ने प्रस्तुत किए हैं, इन विचारों का संकलन जम्भवाणी में है। वृक्ष को बचाने का उन्होंने नियम बनाया था कि- 'रूंख लीला नहीं घावै' जिसका तात्पर्य है कि 'हरा वृक्ष न काटें'। आज विश्व जलवायु परिवर्तन से हो रहे बदलाव से परेशान है। पर्यावरण संरक्षण के लिये मानव, जीव-जन्तु एवं वनस्पति जगत में सन्तुलन रहना आवश्यक है। इसी सबको ध्यान में रखकर जाम्भोजी ने हरे वृक्ष न काटने को कहा। आज औद्योगीकरण के कारण प्रदूषण खूब बढ़ा उसी हिसाब से पेड़ों की बेहिसाब कटाई की गई जिसका परिणाम हम सबके सामने है। यह समस्या उस जमाने में नहीं थी फिर भी जाम्भोजी ने इसे उसी समय महसूस किया था। इनका साहित्य आज आधुनिकता बोध का एक उदाहरण हमारे सामने प्रस्तुत करता है। इस समस्या का समाधान बताने वाले ये भक्तिकाल के अन्यतम व्यक्ति हैं।

उन्होंने स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जिसकी अनदेखी करने से कई बीमारियाँ फैलती हैं। इसीलिए वे

कहते हैं कि- **'पांणी बांणी ईन्धणी, दूध ज लीजै छांण'**। अर्थात् पानी, वाणी, ईंधन और दूध छानकर प्रयोग करें। जिसके माध्यम से वह स्वास्थ्य की दृष्टि से शुद्ध जल के प्रयोग पर बल दे रहे हैं जो कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है क्योंकि बहुत सी छोटी-मोटी बीमारियाँ अशुद्ध पानी के कारण ही होती हैं। वह वाक् संयम की बात कर रहे हैं। ईंधन में बहुत सारे कीड़े-मकोड़े उसमें अपना घर बनाये होते हैं जिनकी रक्षा के लिए वह उसे साफ कर ही प्रयोग में लाने की बात करते हैं। पशुओं से दूध दुहते समय कई बार उनके शरीर से चिपके हुए मिट्टी के कण और बहुत सारे कीट दूध में जाकर मिल जाते हैं, जो हमारे शरीर में जाकर हमें बीमार बना देते हैं। अत: उनसे बचने के लिए हमें दूध का सेवन छानकर करने की बात करते हैं।

मनुष्य दिन-प्रतिदिन व्यस्त होता चला जा रहा है और उसे अपने सिवा दूसरों के बारे में सोचने का समय नहीं है, लोगों से लगाव कम होता चला जा रहा है, समाज मेंआपराधिक प्रवृत्तियाँ बढ़ रहीं हैं तथा क्षमा और दया की भावना कम हो रही है, ऐसे समय में वह अहिंसा का संदेश देकर मनुष्य के साथ-साथ जीव-जन्तुओं और पेड़-पौधों के प्रति दया की भावना की स्थापना करते हैं।अत: बिश्नोई पंथ के लोग 'जीव दया पालणी' के नियम का सख्ती से पालन करते हैं। जाम्भोजी की वाणी में जीव-हिंसा न करने का स्वर साफ सुना जा सकता है, वह कहते हैं-

सुणि रे काजी सुणि रे मुल्ला, सुणि रे बकर कसाई।
किण री थरपी छाली रोसौ, किण री गाडर गाई?
सूल चुभीजै करक दुहैली, तो है है जायों जीव न घाई।
थे तुरकी छुरकी भिस्ती दावों, खायबा खाज अखाजूं।
चर फिर आवै सहज दुहावै, तिसका खीर हलाली।

अर्थात् वे मुसलमानों और हिन्दुओं को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि, तुम लोग इन बेचारी भेड़-बकरी और गाय पर छुरी क्यों चला रहे हो। मृत्यु भयानक है। तुम्हें काँटा चुभ जाने पर भी इतना दर्द होता है लेकिन तुम इनके दर्द को क्यों नहीं समझ रहे हो। तुम इनका मांस खाकर स्वर्ग में जाने की इच्छा कैसे रखते हो? गौरतलब है कि आजकल कीड़े-मकोड़ों के प्रति हिंसा तो छोड़ दीजिए लोग इंसान और इंसानियत के प्रति हिंसा करने से भी नहीं कतराते हैं। हम देखते हैं कि प्रायोजित हिंसा और गुंडागर्दी खूब बढ़ रही है, जिसके बहुत सारे उदाहरण हमारे सामने हैं।

गुरु जाम्भोजी ने लोक हितकारी कार्यों को अधिक महत्व दिया है। उनके अनुसार मनुष्य के पास जो कुछ है, उसमें से उसे यथा शक्ति दूसरों की भलाई के लिए दान देना चाहिये। अहिंसा का पालन करने के लिए उन्होंने भाँग, मदिरा आदि सेवन को प्रतिबन्धित किया। मद्यपान को वह एक बुराई मानते थे। इसके सेवन से मनुष्य आलस्य एवं शारीरिक कमजोरी तथा अकर्मण्यता का शिकार हो जाता है और उसका परिवार आर्थिक बदहाली से जूझने लगता है। वह चोरी तथा अपराध में लिप्त हो जाता है। तम्बाकू, सिगरेट, बीड़ी और ऐसे ही कई नशीले पदार्थों के प्रयोग से मनुष्य कई तरह की बीमारियों से ग्रसित हो जाता है। जैसे-दमा, खाँसी, क्षयरोग एवं कैंसर जैसी न जाने कौन-कौन सी जानलेवा बीमारियों को वह न्यौता देता है। इन सबको वह मनुष्य के बीच दूरी बनाने का कारण मानते हैं।

भूमण्डलीकरण एवं बाजारवाद के इस युग में राजनीति का वर्चस्व बहुत अधिक बढ़ गया है। राजनीति, जिसे समाज सेवा का पर्याय माना जाता था, वही आज अपनी नैतिकता से मुँह मोड़े खड़ी है। तथाकथित नीची जातियों और कमजोर वर्गों का शोषण हो रहा है। समाज में असहिष्णुता फैल रही है। फासीवादी ताकतें फल-फूल रही हैं। अत: गुरु जाम्भोजी ने घमंड के त्याग को जरूरी बताया है। इनकी वाणी व्यक्ति को करुणा, दया, नम्रता, क्षमा, सेवा एवं परोपकार को अपनाकर समानता एवं मानव हित के लिए काम करने की प्रेरणा के साथ एक बहुसांस्कृतिक समाज की कल्पना करती है। एक ऐसा समाज जहाँ सबके कामों का सम्मान हो। वहीं भक्तिकालीन कवि तुलसीदास जहाँ गुणहीन ब्राह्मण को प्रतिष्ठा देने तथा उसकी पूजा करने तथा ज्ञानी शूद्र की उपेक्षा करने की बात करते हैं। तुलसी लिखते हैं कि-

पूजिए विप्र सील गुन हीना। नाहीं सुद्र गुन ज्ञान प्रबीना।।

–रामचरितमानस

वही गुरु जाम्भोजी उनसे आगे खड़े दिखाई पड़ते हैं जब वे जाति के निर्धारण में जन्म के स्थान पर कर्म की महत्ता को बताते हैं और कहते हैं कि–

घणा दिनां का बड़ा न कहिबा, बड़ा न लंघिबा पारूं।
उत्तम कुली का उत्तम न होयबा, कारण किरिया सारूं।।

अर्थात् कोई उम्र में बड़ा होने से महान नहीं हो जाता है न ही कोई उच्च कुल-वंश में जन्म लेने से, यदि कोई जन्म से ब्राह्मण है और कर्म से चाण्डाल तो वह महान नहीं हो सकता।

जाम्भोजी ने युक्तिपूर्वक जीवन जीने एवं मोक्ष प्राप्ति के लिए दो उपाय बताये हैं – 'हिरदै नांव विसन का जंपो हाथे करो टबाई।' अर्थात् हृदय में विष्णु का स्मरण और अपने हाथों से अच्छे कर्म करना चाहिए। वह सबमें एक माँस, साँस और देह होने की बात करते हुए भेदभाव मुक्त समाज की परिकल्पना करते हैं तथा जन्म की श्रेष्ठता को अस्वीकर करते हैं। जाम्भोजी की वाणी में कबीर की तरह क्रान्तिकारिता का स्वर सुनाई पड़ता है, और वह धर्म के ठेकेदारों को फटकारते नज़र आते हैं। वे समाज की जड़ता को तोड़ते हुए दिखाई पड़ते हैं।

अपनी वाणी में उन्होंने हिन्दू और मुसलमानों दोनों को ही स्पष्ट शब्दों में बताया कि वेद और कुरान के नाम पर दंत कथाएं बहुत फैल चुकी हैं। ब्राह्मण वेद को भूल चुका है और काजी ने अपनी कलम खो दी है। वे हिन्दू और मुसलमान दोनों को दो अलग-अलग पंथ नहीं मानते हैं। बल्कि वे कहते है कि ये तो अल्लाह और ईश्वर को प्राप्त करने के दो अलग-अलग रास्ते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के शरीर में खुदा का प्रकाश है। मुसलमान होकर हज और काबे की यात्रा करना केवल भूल का प्रमाण है। इसलिए हे शेख, सूफी, काफिर चिश्ती तुम सभी सुनो ये शरीर झूठा है। उत्पन्न और नष्ट होता है। हिन्दू और मुसलमान सभी को उसी का स्मरण करना चाहिए, क्योंकि अंत में खुदा सब बातों का हिसाब लेंगे। तब सभी को उस प्रभु के स्मरण न करने पर मलाल होगा। वे कहते हैं कि अड़सठ स्थानों पर जो प्रसिद्ध तीर्थ स्थल हैं वे बाहर न होकर हमारे हृदय के भीतर ही हैं।

अड़सठ तीर्थ हिरदै भीतर, बाहर लोका चारूं।
नान्ही मोटी जीया जूणी, एति सांस फूरंतै सारूं।

वे ब्रह्म जीव और जगत की चर्चा करते हुए, जीव की तुलना कांसे की थाली को पीटने से निकलने वाली ध्वनि से देते हैं और ब्रह्म को तिल में छुपे तेल और जगत या शरीर को उसकी खली से उदाहरण देकर बताते हैं। जैसे–

कंसा शब्दे कंस लुकाई, बाहर गई न रीऊ।
क्षिण आवै क्षिण बाहर जावै, रूतकर बरशत सीऊं।
तेल लियो खल चोपै जोगी, तिहिं को मोल थोड़े रो किया।

'जम्भवाणी' में अपने आस-पास के उदाहरणों से तर्कों के सहारे बात कही गयी है, जो आम जनमानस को साथ लेकर चलती है। इसमें शैली के साथ-साथ हम विषयवस्तु में भी एक नयापन पाते हैं, जो आधुनिकता का उदाहरण प्रस्तुत करता है। सैद्धान्तिक के साथ-साथ व्यावहारिक स्तर पर भी बिश्नोई पंथ का अलग वैशिष्ट्य है। बढ़ते फासीवाद और असहिष्णु होते समाज में जहाँ दया और करुणा को कुचला जा रहा है और जब व्यवस्था का चमचा युग चल रहा है। ऐसे समय में गुरु जाम्भोजी का मंत्र– 'जीव दया पालणी अर् रूंख लीलो नहिं घावै' अर्थात् 'पृथ्वी के समस्त जीवों पर दया करो और हरे वृक्ष मत काटो' की प्रासंगिकता बढ़ती जा रही है। बिश्नोई पंथ के लोग इस सूत्र का मजबूती से पालन कर रहे हैं। आज की युवा पीढ़ी जाम्भोजी की विचारधारा को अच्छी तरह से समझकर ही आधुनिक युग की जटिल समस्याओं का समाधान कर सकती है और अपने भौतिक जीवन को सफल बनाते हुए एक बेहतरीन समाज की कल्पना कर सकती है।

–मनीष पटेल
शोध छात्र (हिन्दी)
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

जाम्भाणी साहित्य में लोक-संस्कृति का चित्रण

समाज और संस्कृति का घनिष्ठ संबंध रहा है। यह तो हो सकता है कि संस्कृति किसी व्यक्ति विशेष से संबंध न रखे किन्तु यह नितान्त असंभव है कि वह किसी मानव जाति या समाज से अपना नाता तोड़ ले। संस्कृति का विकास मानव के सामूहिक प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप होता है। संस्कृति में अधिकारों की अपेक्षा कर्त्तव्य ज्यादा महत्वपूर्ण हैं। संस्कृति में विविधता में एकता के दर्शन किए जा सकते हैं। संस्कृति के विकास में आदान-प्रदान का स्वभाव निहित होता है। पारस्परिक सम्पर्क से ही संस्कृति का विकास होता है। भारतीय संस्कृति इसका प्रमाण प्रस्तुत करती है। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार 'हमें किसी सिद्धान्त का त्याग नहीं करना चाहिए कि वह अभारतीय है। हमें विदेशी सिद्धान्त भी गुणों की कसौटी पर ग्रहण करना चाहिए।'

संस्कृति की परिभाषा को लेकर विद्वानों में पर्याप्त मतभेद रहा है फिर भी अगर निष्कर्ष रूप में हम परिभाषित करना चाहें तो कह सकते हैं कि 'समस्त सीखा हुआ व्यवहार ही संस्कृति है। इसका आशय यह हुआ कि मनुष्य ने धर्म आचार-विचार और रहन-सहन आदि की जिन मान्यताओं को परंपरा से अर्जित एवं निर्धारित किया है वे ही उसकी संस्कृति के मूल उपादान अथवा तत्व है।' किसी भी भाषा का लोक साहित्य अपनी लोच, ताजगी और लोकप्रियता में शास्त्रीय साहित्य से भिन्न होता है। लोक साहित्य सीधा जनता का संवाद होता है बल्कि यह तो जनता का ही साहित्य होता है। खेत, गांव, गली, चौपाल का साहित्य होता है।

लोक शब्द अपने आप में बहुत व्यापक है। शिव कुमार मिश्र के अनुसार 'लोक परिष्कृत परिनिष्ठित या शिष्ट का विलोम है लोक शब्द हिन्दी में साधारण जन के लिए भी प्रयुक्त होता है जिसका विलोम अभिजात या अभिजन वर्ग से है।' आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार भी लोक जीवन का मतलब प्रायः साधारण जनता के इसी विशाल भग से होता है।' डॉ. रामविलास शर्मा ने तो भक्तिकाल को लोक जागरण ही कहा है उनके अनुसार 'भक्तिकाल के पुरोधा तो लोक की चिंता से जुड़े ही थे उनकी शक्ति और उर्जा का स्रोत भी लोक ही था शास्त्र या वेद नहीं'।

भारतीय इतिहास का मध्यकाल व्यापक सांस्कृतिक अतिक्रमण का काल था। इस युग में भारतवर्ष पर अनेक विदेशी आक्रमण हुए जिनमें डकैती, चोरी, कत्ले आम जैसी भयानक विकृतियों से भारतवासियों का पाला पड़ा। जिस भारतवर्ष के ऋषि-मुनियों ने 'दया धर्म का मूल है' तथा 'शूल चुभीजै करक दुहेली' हग्सी सागच बा पअरचय अदया वझ्रि इन सांस्कृतिक हमलों ने भारतीय संस्कृति और लोक को गहरी चोट पहुंचाई। इसी चोट के खिलाफ ऐसा महान आंदोलन समूचे भारतवर्ष में खड़ा हुआ जिसका नाम पड़ा भक्ति आन्दोलन। भक्ति आंदोलन ने अनेक अमूल्य रतन भारतवर्ष को दिए उनमें से एक थे गुरु जाम्भोजी। इस आंदोलन को गति और उर्जा देकर गुरु जाम्भोजी और उनके अनुयायियों ने अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया।

गुरु जाम्भोजी सहित समस्त जांभाणी साहित्य परम्परा के कवियों ने लोक संस्कृति को अपनी वाणी का मुख्य विषय बनाया है। लोक में रचे बसे जनमानस के रीति रिवाज विश्वास आचार-विचार, रहन-सहन, बोल-चाल तथा सामाजिक और पारिवारिक विश्वासों और गतिविधियों का चित्रण प्रमुखता से किया है। लोक में फैले भ्रष्टाचार और पाखण्डों की कलई खोलकर रख दी है वहीं लोक संस्कृति के प्रमुख मूल्यों दया, विनम्रता, प्रेम, भाईचारा प्रकृति प्रेम आदि का बड़ी ही मधुर भाषा में चित्रण किया है।

गुरु जाम्भोजी ने अपने समय के लोक विश्वासों और लोक रीतियों को बहुत सुन्दरता के साथ अपने सबदों में समाहित किया है और इनके माध्यम से जीवन जीने के अनेक सूत्र भी जनमानस को प्रदान कर दिए हैं। तत्कालीन समय में थार के बियाबान मरूस्थल में एक

माता और पिता अपने पुत्र के बारे में क्या सोचा करते थे तथा माता किस प्रकार विवाह के गीतों की खुशी अनुभव करती है इसकी सुन्दर झलक सबदवाणी में दिख पड़ती है –

'बाप जाणे मेरे हलियो टोरे, कोहर सींचण जाई।
माय जाणे मेरे बहुटल आवे, बाजे बिडद बधाई।'

अर्थात् एक मां की खुशी का उस समय ठिकाना नहीं रहता जब उसकी बहु घर में प्रवेश करती है और गांव की महिलाएं मधुर गीतों की मंगलध्वनि के साथ नव वधू का स्वागत करती हैं। वहीं बेटे द्वारा हल संभालना पिता के लिए सबसे बड़ी राहत होती है। यानि पिता की जिम्मेदारियां अपने कंधे पर उठा लेना। ये कोई साधारण बात नहीं है ये एक पीढ़ी द्वारा दूसरी पीढ़ी को अधिकारों और संस्कारों का हस्तांतरण है जिसका चित्रण संपूर्ण जांभाणी साहित्य में मिलता है।

भारतीय लोक परंपरा में गुरु का विशेष महत्व रहा है। गुरु जाम्भोजी एवं परवर्ती कवियों की रचनाओं में तत्कालीन गुरु शिष्य परंपरा और लोक विश्वास में गुरु की स्थिति और गुरु के गुणों का बखान जांभोजी ने अपनी सबदवाणी के अनेक प्रसंगों में किया है। लोक में ये आस्था थी कि गुरु के मुख से ही धर्म का बखान हो सकता है। साथ ही साथ गुरु के गहनों के रूप में आचरण का भी चित्रण किया है–

'गुरु चीन्हों गुरु चीन्ह पुरोहित, गुरुमुख धर्म बखाणी।
जो गुरु होयबा, सहजे शीले शबदे नादे वेदे,
तिहिं गुरु के आलिंकार पिछाणी।'

रेगिस्तान की वीरान तपती धरती में वृक्षों और हरियाली का सर्वथा अभाव था। जिसके कारण वर्षा भी नहीं होती थी। अत: अक्सर अकाल पड़ते थे इसलिए लोग अपनी और अपने पशुओं की जान बचाने के लिए पशुओं सहित अपने रिश्तेदारों के यहां जाकर आश्रय लेते थे, जब उनके अपने गांव में वर्षा हो जाती थी तो पुन: लौट आते थे। ये मानव प्रेम और भाईचारे की अद्‌भुत मिसाल थी। लोक भाषा में इसे गोल कहा जाता है। जाम्भोजी ने मानव जीवन को भी इस गोल के रूप में मानकर कई स्थानों पर सुन्दर रूपक स्थापित कर दिया है। उन्होंने प्रतीकात्मक रूप में जीवन को गोल मानते हुए लिखा है –

'गोवल वास कमायों जीवडा, सो सुरगा पुरी लहंणा।'
'घर आगी इत गोवल वासो, कुडी आधोचारी।'

अकाल का चित्रण वील्होजी ने भी मार्मिक रूप में किया है –

'संमत कहावे पैनरा सयो, कुसमुं सबल बयालौ पयौ।
जीवां जूण्य सताई भूख, गउआं मिनखां इधको दूख।'

निरक्षर और भोली-भाली जनता में भूत-प्रेतों का काफी आतंक समझा जाता था जिनसे जाम्भोजी ने निजात दिलाई। ये पाखंड 21वीं सदी के वैज्ञानिक युग में आज भी देखने को मिल जाता है। सबदवाणी के अनुसार–

'चोइस चेडा कालिंग केडा, अधिक कलावंत आयसै,
वैफैर आसन मुकर होय बैसेला, नुगरा थान नचायसै।'

गुरु जाम्भोजी ने साणिया नामक भूत को नष्ट कर प्रतीकात्मक रूप में बिश्नोई पंथ से अंधविश्वास का अंत ही कर दिया।

'साणिया पैंदडो जात को, एक थली जू बैठो तेव।
लोग कहे तू कौण है, साणियो कहे मैं हूं देव।'

गुरु जाम्भोजी ने स्वयं लिखा है–

'भूत परेती कांय जपीजे, यह पाखण्ड परवाणो।'

तीर्थाटन का काफी बोलबाला था। जनता तीर्थाटन कर अपने पापों का प्रायश्चित करने में पुण्य समझती थी। परन्तु गुरु जांभोजी ने इसका चित्रण करते हुए सभी तीर्थों को मनुष्य के हृदय में ही स्थित बताकर बाहर केवल लोक दिखावा बताया –

'अडसठ तीरथ हीरदा भीतर बाहर लोका चारूं।'

परंपरागत समाज और धर्म की डूबती नाव की मरम्मत करते हुए जाम्भोजी ने एक पूरी की पूरी व्यवस्था ही खड़ी कर दी। जिसकी उपादेयता हमें आज भी महसूस हो रही है। प्रकृति की शरण में बैठकर शुद्ध आचरण और पवित्रता का जीवन जीने का सन्देश ही सबदवाणी का आधार बन पाया है। यही लोक चिन्तन

जाम्भोजी को अपने समय से आगे हमारे समय से जोड़ता हुआ प्रतीत होता है। जाम्भोजी के इसी चिन्तन में अन्याय अनीति भेदभाव निष्प्राण रूढ़िवादी धार्मिक पाखण्ड सबका विरोध है, चाहे उनका संबंध शास्त्र से हो अथवा लोक से।

तत्कालीन सामन्ती समाज की उंची दीवारों में कैद सामान्य जन जातिवाद और वर्ण व्यवस्था के कीचड़ में बुरी तरह से फंसा कराह रहा था। ये प्रथाएं संस्कृति का हिस्सा बन चुकी थी। ऊंच-नीच की खाई बहुत गहरी थी जिसे पाटना आसान नहीं था। जाम्भोजी ने इसका चित्रण करते हुए इन सभी भेदों को समाप्त करने का आह्वान किया है –

'उत्तम कुली का उत्तम ना होयबा, कारण किरया सारूं।'

एक और सबद में लिखते हैं–

'उत्तम मध्यम क्यूं जाणिजै, विवरस देखो लोई।'

समकालीन संतों की तरह जाम्भोजी ने भी जीवन पर्यन्त भ्रमण कर जनता के दु:ख दर्द को समझा और दूर करने का प्रयास किया। इस दौरान वे बाहर भी अनेक स्थानों पर गए जिसके कारण वहां के लोक में प्रचलित भाषा एवं संस्कृति की स्मृतियां भी जाम्भोजी की वाणी में उपलब्ध होती है। संतों के लिए लोक में अपनी बात पहुंचाने का सबसे बड़ा हथियार लोक भाषा ही रही है। लोक भाषा के माध्यम से ही बात सामान्य जन तक पहुंच सकती है। गुरु जाम्भोजी ने तत्कालीन राजपूताने में प्रचलित राजस्थानी भाषा का प्रयोग किया है जिसमें मुख्य रूप से लोक प्रचलित दोहा छन्द में अपनी बात प्रस्तुत की है।

लोक में प्रचलित रूढ़ियों एवं लोक विश्वास तथा लोक रीति आदि के चित्रण के लिए लोक भाषा के अतिरिक्त कोई भी माध्यम नहीं हो सकता। उनकी वाणी में विद्वता के बजाय सीधी और सरल भाषा का प्रयोग है जहां-तहां पंजाबी, उर्दू, अरबी, फारसी, ब्रज, अवधि, खड़ी बोली आदि के शब्दों का प्रयोग भाषा की रवानगी और सजीवता के साथ-साथ गुरु जाम्भोजी की लोक चेतना का प्रमाण है। लोक में प्रचलित लोकोक्ति और मुहावरे रोचकता के साथ-साथ ताजगी प्रदान करते हैं।

निष्कर्षत: तत्कालीन पतनोन्मुख सामन्ती युग में गुरु जाम्भोजी ने सांस्कृतिक पतन को दरकिनार कर सामान्य जन को सम्मान का जीवन जीने के लिए एक मशाल जलाई थी जो आज भी जल रही है और इस मशाल के नीचे अभिशप्त और प्रताड़ित लोगों को आश्रय देकर उन्हें प्रकृति की ओर मोड़ना एक स्तुत्य प्रयास था जिसके पालन की आवश्यकता आज उस समय से भी कहीं ज्यादा महसूस की जा रही है।

–डॉ. मनमोहन लटियाल
नारायणा, नई दिल्ली 28

लेखकों से अनुरोध है कि.....

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी अमर-ज्योति का जून का अंक पर्यावरण अंक के रूप में प्रकाशित किया जाएगा। पर्यावरण से सम्बन्धित शोधपत्र, लेख, कविता, गीत, कहानी, स्लोगन इस अंक हेतु आमन्त्रित हैं। रचना व सुझाव भेजने की अंतिम तिथि 10 मई, 2017 है। आप अपनी रचना AAText या Krutidev10 फोंट में टाईप करके भी भेज सकते हैं। हमारा ईमेल पता है : editor@amarjyotipatrika.com, info@amarjyotipatrika.com

नोट: लेख/रचना की अधिकतम शब्द सीमा 1500 है। **– सम्पादक**

प्रथम गुरु - माँ

बचपन में एक कहानी पढ़ी थी। एक युवा को जब उसके अपराधों के लिए फांसी की सजा सुनाई और उसकी अंतिम इच्छा पूछी तो उसने माँ से मिलने की इच्छा जाहिर की। माँ से मिलने पर उस व्यक्ति ने माँ का हाथ लेकर अपने गाल पर एक चांटा लगाते हुए कहा कि माँ तुमने मेरे पहले अपराध पर यह चांटा मुझे लगाया होता तो आज यह दिन देखना नहीं पड़ता।

युवा पीढ़ी की ये हालात आज एक ज्वलंत समस्या है। गत दो-तीन दशकों से भौतिकवाद के विस्तार के साथ ही युवा पीढ़ी के जीवन में जो खुलापन आया है, उसने सभी सामाजिक बंधन तोड़ दिए। संस्कार, नैतिकता जैसे शब्द युवा पीढ़ी के लिये मजाक के विषय बन गए हैं । आज उस समाज के भविष्य का अंदाज आसानी से लगाया जा सकता है, जहां बाल अपराधों का प्रतिशत निरंतर बढ़ रहा है तथा जहां 15 वर्ष से कम उम्र के छोटे-छोटे बच्चे लाखों की तादाद में नशीली दवाओं का सेवन करने लगे हैं। इस तरह की प्रवृत्ति किसी एक दिन की देन नहीं है अपितु इसके बीज बहुत पहले ही बो दिए जाते हैं यह घर में निरंतर होने वाली उपेक्षा व घृणा की प्रतिक्रिया होती है, जो धीरे-धीरे हितों का रूप ले लेती है।

किशोर पीढ़ी ने खुलेपन को कुछ इस तरह स्वीकार किया कि आज तमाम मर्यादाएं ही खत्म हो गई हैं। भोगवाद से पनपी यह संस्कृति चोरी करो, उधार मांगों पर ऐश करो को बढ़ावा दे रही है। निःसंदेह आज अभिभावकों ने बच्चों के लिए सुविधाओं का अंबार तो लगा दिया, किंतु उन्हें समय नहीं दिया। बच्चों को आकाश में उड़ने के लिए पंख तो दे दिए, किंतु उनके सामनें कोई लक्ष्य नहीं रखा और इस तरह सुविधा सम्पन्न, किंतु दिशाहीन युवा पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक परम्परा व आजादी की पृष्ठभूमि से दूर हो गई तो समाज का प्रौढ़ वर्ग भी अपनी जवाबदारी से मुँह नहीं मोड़ सकता। यही नहीं माता-पिता की व्यस्तता के कारण बच्चों के मार्गदर्शक हैं- टी.वी. पर प्रसारित विज्ञापन, जो उन्हें सिखाते हैं ऐसे रहो, ये पहनों, ये खाओ। इन विज्ञापनों ने नई पीढ़ी में ऐसा भ्रम पैदा किया है कि वे ऐसा मानने लगे हैं कि यदि वे इन उत्पादों को नहीं अपनाएंगे तो इस आधुनिक समाज में पिछड़ जाएंगे। हमारे बिश्नोई समाज के अधिकतर बच्चो को हमारा इतिहास हमारे 29 नियम तक का ध्यान नहीं हैं इसमें आधुनिकता का दोष है या परिवार व समाज का। बच्चे किताबों को तो देखना तक नहीं चाहते। आज घरों में अच्छे साहित्य की जगह उपलब्ध है नए-नए चैनलों द्वारा दिया गया फूहड़ मनोरंजन, जिसने समाज में विकृति दी है, विलास व हिंसा को बढ़ाया है। बच्चों के जीवन में अपसंस्कृति का मीठा जहर घोल दिया है।

समाज के बड़े लोग ही विलासिता में मस्त हैं तो नई पौध में संस्कार के फल कैसे रोपे जा सकते हैं। परहेज उपचार से बेहतर है। यह बात स्वस्थ समाज के लिए भी उतनी ही आवश्यक है जितनी स्वस्थ शरीर के लिए। स्वस्थ समाज हमें मिलकर तैयार करना होगा। हमें करना होगा आत्मचिंतन, समझना होगा संस्कृति के मूल्यों को, बचाना होगा अपने को उपभोक्तावाद के आक्रमण से। हमारे बच्चों को बूढ़ों का मान-सम्मान न करना तो जैसे फैशन है। किया तो ठीक, न किया तो ठीक। अरे यही अमूल्य सम्पति है जो कल को हमारे हाथ से निकल जाएगी तो क्यों न इनका तजुर्बा और ज्ञान-विचार हासिल किया जाये तभी तो हमारी नई पौध पुष्पित व पल्लवित होती रहेगी, संस्कार के फलों से। इसे हम मिलकर और मजबूत बना सकते हैं। हमारे 29 नियमों का पालन कर व गुरु जाम्भोजी महाराज के बताए मार्गदर्शन पर चल कर।

-**शैलजा**, कमला नगर, हिसार

किसान : दशा और दिशा

आज हम हर मुद्दे पर बात करते हैं चाहे वह स्त्री-शिक्षा का हो, भ्रष्टाचार का हो या राजनीति का हो। किसान और खेती पर यदि बात की जाये तो यह आश्चर्य का विषय नहीं है कि उसकी दशा और दिशा जस-की-तस बनी हुई है। परम्परागत तरीकों से खेती करने और अनिश्चित वर्षा के कारण फसल कम प्राप्त होती थी जिस कारण उसकी जेब में खर्चा रुपया और आमदनी अठन्नी वाली स्थिति बनी हुई थी। अशिक्षा के कारण आढ़तिया सूद पर सूद बढ़ाकर असल कभी उतरने नहीं देता था। प्रेमचन्द के गोदान का होरी और आज का नीचे तबके का किसान दोनों की हालत एक जैसी है, दोनों कर्ज में डूबे हुए।

भारत में 1966-67 में आई हरित क्रांति ने खेती की दिशा पलटनी शुरू कर दी, इससे उत्पादन तो बढ़ना आरंभ हुआ किन्तु किसान के कंधों पर खर्च का बोझ बढ़ने लगा। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के बढ़ते प्रयोग ने मिट्टी की गुणवत्ता को नुकसान तो पहुंचाया ही, भू-जल को भी विषैला करना शुरू कर दिया। छोटे किसान कर्ज लेकर इस दौड़ में शामिल हुए क्योंकि खेती का ढाँचा बदल गया, संकर बीजों ने परम्परागत खेती को समूल नष्ट कर दिया। आरम्भ में, अनाज के उत्पादन में वृद्धि हुई किन्तु इसके दूरगामी परिणामों पर विचार नहीं किया गया। सरकार द्वारा जारी की गई सब्सिडी बिचौलिये खाने लगे, राहत पैकेज आज भी पूरी तरह किसानों तक नहीं पहुंचता और उसकी मेहनत की पूरी कीमत उसे कभी मिली ही नहीं।

बढ़ती महंगाई और कर्ज के कारण सन् 1990 से किसानों की आत्महत्याओं के आँकड़ों में निरंतर वृद्धि होती रही। किसानों की सबसे सबसे बड़ी त्रासदी का ताजा उदाहरण तमिल के किसान हैं जिनकी फसल सूखे के कारण मारी गई। सरकार से सूखा राहत फंड बनाने, 60 वर्ष से अधिक किसानों को पेंशन देने और पानी की समस्या के निवारण हेतु नदियों को जोड़ने आदि मुख्य मांगों को पूरा करने के लिए इन्होंने अनेक तरीके अपनाये लेकिन क्या कारण है कि इनकी आवाज न तमिलनाडु सरकार ने सुनी, न केंद्र सरकार ने। जहाँ तक प्रश्न पेंशन का है एक बार शपथ लेने वाले नेता को उम्रभर पेंशन दी जाये और अन्न उगाने वाले को कर्ज ये बात गले नहीं उतरती। क्या यह दुर्भाग्यपूर्ण नहीं है कि अन्नदत्ता मानव-मूत्र पीने के लिए मजबूर हो जाएँ। किसान हो, चाहे मजदूर सब क्षेत्रीयता, धर्म और जाति में बाँट दिए गए, किसान सिर्फ किसान नहीं रहे, मजदूर मजदूर नहीं रहे। संगठन की कमी के चलते किसानों और मजदूरों की कहीं सुनवाई नहीं होती। अगर पंजाब का किसान मर रहा है तो हरियाणा में आवाज नहीं उठेगी, हरियाणा का मर रहा है तो पंजाब में आवाज नहीं उठेगी। फिर उत्तर और दक्षिण भारत के विषय में क्या कहा जा सकता है। आम जनता इनसे कोई सरोकार नहीं समझती, इनके हक की बात उठाना तो दूर की बात है। आज आवश्यकता किसानों के एकजुट होने की, अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने की है।

-शर्मीला
शोधार्थी, हिन्दी-विभाग,
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ बधाई सन्देश ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

संदीप बिश्नोई सुपुत्र श्री हंसराज धारणिया, निवासी संगरिया, जिला हनुमानगढ़ (राज.) की पदोन्नति सिंचाई विभाग, हरियाणा में मुख्य अभियन्ता (Chief Engineer) के पद हुई है।

राजेश बिश्नोई सुपुत्र श्री रिशाल सिंह जाजूदा, निवासी सदलपुर, जिला हिसार का चयन Tata Consultancy Services की ओर से इलैक्ट्रिक कार (Environment Friendly Car) चार्जिंग प्रोसेस का अध्ययन करने के लिए फ्रांस (पेरिस) में हुआ है। हाल में आप सिस्टम इंजीनियर के पद पर TCS, पुणे में नियुक्त हैं।

गौरव सुपुत्र श्री लीलूराम गोदारा, निवासी गाँव-बड़ोपल (फतेहाबाद) हाल चण्डीगढ़, की नियुक्ति Deloitte Consulting India, Hyderabad में तकनीकी सलाहकार के पद पर हुई है।

सुरेश भादू सुपुत्र स्व. श्री हंसराज भादू, निवासी गांव रावतखेड़ा, हिसार ने 35वीं राष्ट्रीय शूटिंग बॉल प्रतियोगिता में हरियाणा की टीम का कप्तान के रूप में नेतृत्व किया। आपकी टीम ने इस प्रतियोगिता में दूसरा स्थान प्राप्त किया व इस प्रतियोगिता में आपको सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी भी चुना गया है।

आप सबकी इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर बिश्नोई सभा, हिसार व अमर ज्योति पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

विज्ञापन सूचना

समाज सेवी उद्यमी एवं व्यवसायी बन्धुओं के लिए हर्ष की बात है कि अब आपकी चहेती पत्रिका 'अमर ज्योति' में प्रत्येक माह दो पृष्ठ (कवर पृष्ठ संख्या तीन व चार) विज्ञापन के प्रकाशित होंगे। इन पृष्ठों पर विज्ञापन की दर इस प्रकार रहेगी –

कवर पृष्ठ संख्या तीन	
पूरा पृष्ठ	रु. 10,000
आधा पृष्ठ	रु. 6000
एक चौथाई	रु. 3500

कवर पृष्ठ संख्या चार	
पूरा पृष्ठ	रु. 15,000
आधा पृष्ठ	रु. 10,000
एक चौथाई	रु. 6000

विज्ञापन देने के लिए अमर ज्योति कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क सूत्र – 01662-225804, 8059027929, ई-मेल : editor@amarjyotipatrika.com

जांभाणी हरजस

वील्होजी कृत हरजस (राग भैरू)

अलाह अलेख निरजण देव,
किण्य विध्य करूं तुम्हारी सेच ॥1॥
विसन कहूं जांकौ विसतार,
किसन सोई सिरज्यौ संसार।
गोम्यंद सो व्रमंडां गहै,
सोई सामी जुगे जुग्य रहै॥2॥
अलाह सोई जो उमति उपाय,
दस दर खोलै सोई खुदास।
लख चौरासी रौह परवरै,
सोई करीम जौ एती करै॥3॥
गोरख जो ग्यान गम की कहै,
महादेव जो परमंन की लहै।
सिध सोई जो साझै अति,
नाथ सोई जो त्रभुंवण पति॥4॥
जोगी सो जीण्य जरणां जरी,
भगति सोई जीण्य भाव सूं करी।
आपा मुसस मुसळमाण,
सतगुरु कहै साच करि जाण॥5॥
सिध साधु पकबर हुआ,
जैप एक भेख जुजुवा।
अपरपर का नांव अनंत,
वील्होजी सिंवरि सोई भगवंत॥6॥

हे अल्लाह, अलेख निरंजन, देव, मैं तुम्हारी किस प्रकार सेवा करूं? अगर आपको विष्णु कहता हूँ तो इसमें बहुत विस्तार है, कृष्ण वही है, जिसने इस संसार की रचना की है।

गोविन्द वह है जो ब्रह्माण्ड को ग्रहण करता है और श्याम वही है जो सभी युगों में रहता है। अल्लाह वह है जो उमति उत्पन्न करता है, दसवें द्वार को खोलता है - वह खुदा है, जो चौरासी लाख योनियों के संकट मेटता है - वह करीम है। गोरख वह है जो ज्ञान के रहस्य को जानता है, महादेव वह है जो दूसरे के मन को पहचानता है, सिद्ध वह है जो इतनी सब बातों को साधता है, नाथ वही है जो तीनों लोकों का स्वामी है। योगी वह है जो धैर्य रखता है, भक्ति वह है जो शुद्ध भाव से की जाती है, जो स्वयं कष्ट सहन करता है वह मुसलमान है, जो सतगुरु कहते हैं उसे सत कर मानो। सिद्ध, साधु और पैगबंर हुए हैं वे सब एक ही ईश्वर हैं, उनके वेश ही अलग-अलग हैं, उस अपरम्पर ईश्वर के अनन्त नाम हैं, कवि वील्होजी ऐसे भगवान का स्मरण करते हैं।

वील्होजी कृत हरजस (राग आसा)

अवधू नै अभिमान न होई, दुनिया की मान्य न रीझै सोई॥1॥
बर सोल संम करि चालै, तसकर पांच पुळंता पालै।
परहरि देस दीप बोह रमणां, आसण मांडि गंगा विच जमणां॥2॥
सकल छाडि अकळ सूं राचै, संक वीडारि मगन होय नाचै।
वील्ह कहै मुखि कूड़ कहणां,
तज्य अभेमान खाक होय रहणां॥3॥

हे योगीजन, अभिमान का त्याग करो, दुनिया में मान-बड़ाई की आशा न रखो। हे मूर्ख, आँखें खोल और समझ कर चल, पांचों चीरों को रोको और इस संसार के मोह-माया को छोड़कर ज्ञान मार्ग में रमो, ज्ञान गंगा में आसन जमाओ। सब अन्यों को छोड़कर ब्रह्म में लगो और सब शंकाओं का निवारण करके ब्रह्म में मस्त रहो, कवि वील्होजी कहते हैं कि मुख से झूठ मत बोलो और अभिमान को त्याग कर खाक के समान रहो।

साभार- बिश्नोई संतों के हरजस

बिश्नोई लोकगीत

बनोळे के गीत

पूछै म्हारी राय बनगी माँ, आज बनोळो कण निंवतयो ?
(गांव का नाम) में राजू जी रा सिव,आज बनोळो बां निंवतयो।
जां घर गोदारी दे नार, भली रे जुगत सूं जीमाया।
जीमै म्हारो लाडलो, घी, गुड़ लापसी जै।
पीवै म्हारो लाडलो भैंसड़ल्या रो दूध, माय पतासा घोलिया।
लाडको म्हारो डूंगररीय रो मोर जै, लाडली ढ़लकत चालै ढेलरी जै।
मलक सूंयू चालै डूंगरीय रो मोर जै, ढ़लकत चालै ढेलरी जै।
लाडलो म्हारो रोइड़ै रो फूल जै, लाडली म्हारी केलु कामठी जै।
झबकण लाग्यो रोइड़ै रो फूल जै, ललकण लागी केलु कामठी जै।
लाडलो म्हारो चम्पेली रो फूल जै, लाडली म्हारी कसुम्बा चूंदड़ी जै।
पलकण लाग्यो चम्पेली रो फूल जै, सदा ही सुरंगी चूंदड़ी जै।
लाडलो म्हारो सावणीय रो लोर, लाडली म्हारी आभा बीजळी जै।
घुट-घुट बरसै सावणीय रो लोर, कड़-कड़ आवै बीजळी जै ॥1 ॥

---00---

बैठी माँ म्हारी छाजई री छांय, ढलक ओतारी माँ म्हारी कुकड़ी जै।
हाथ अटेरन खुंजै कुकड़ी, सखरी अटैरी माँ म्हारी कुकड़ी जै।
जायज्यो माँ म्हारी पोलीड़ै री हाट,
सखरी बणाल्यावो भाइयां प्यारी नै लोवड़ी जै।
दूजां री ए बाई छटोड़ै मास,
थारोड़ी बण ल्याऊं दीवलै रे चानणै जै।
जायज्यो माँ म्हारी धोबीड़ै री हाट,
सखरी धो ल्यावो धण परवारी नै लोवड़ी जै।
दूजां री ए बाई छटोड़ै मास,
थारोड़ी धो ल्याऊं चाँद रे चानणै जै।
जायज्यो माँ म्हारी सहेल्यां रै बार,
सखरी कढा ल्यावो मृगानेणी नै लोवड़ी जै।
एड़ै-छेड़ै तो ए बाई दादर मोर, बीच में लिखीयो सहेल्यां रो।
जाजो झुलरो जै।
मोरिया-मोरिया बाई उड़-उड़ जाय,
सहेल्यां सीधारी सुरंगै सासरै जै।
जायज्यों माँ म्हारी बडोड़ै बीर रै बार,
सखरी मोलाय धण परवारी नै लोवड़ी जै।
बडोड़ै बीर गै ए बाई कळागारी नार, उठ सवेरै माँ सूं कळै करै जै।
जायज्यो माँ म्हारी बीचलै बीर रै बार,
सखरी मोलाय मृगानैणी नै लोवड़ी जै।
बीचलै बीर गो ए बाई बीच में सासरो,
बांगी ना ओढावा बाई लोवड़ी जै।
जायज्यों माँ म्हारी नेनड़िय बीर रै बार,
झड़क ओढावै धण परवारी नै लोवड़ी जै ॥2 ॥

---00---

आरतड़ो कर भुआ, लाडो बाह्यर खङ्यो।
थारै बनड़ै रा चिंत्या हुआ, लाडो बाह्यर खङ्यो।
आरतड़ो कर माँ लाडो बाह्यर खङ्यो।
थारै खेता मतीरा पाकी, लाडो बाह्यर खङ्यो।
कण फोड़ी, कण चाखी, लाडो बाह्यर खङ्यो।
आ तो चोरे फोड़ी, छोरे चाखी, लाडो बाह्यर खङ्यो।
आरतड़ो कर बाई ए, लाडो बाह्यर खङ्यो।
थे तो पैरो ए घणेरो गहणों, लाडो बाह्यर खङ्यो।
आरतड़ो कर ए मामी, लाडो बाह्यर खङ्यो।
थानै लेग्या मोडा स्वामी, लाडो बाह्यर खङ्यो ॥3 ॥

---00---

साभार- बिश्नोई लोकगीत

लोकगीत हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। इन्हें संजोकर रखना हमारा दायित्व है। खेद का विषय है कि आज की युवा पीढ़ी लोकगीतों को भूलती जा रही है। माताओ-बहनों से अनुरोध है कि बिश्नोई समाज में विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले लोकगीतों को कलमबद्ध कर 'अमर ज्योति' को भेजें ताकि उन्हें प्रकाशित कर भावी पीढ़ी के लिए संरक्षित किया जा सके।

-सम्पादक

बाल कविताएँ

धरती और मानव

भूमि, धरती, भू, धरा,
तेरे हैं ये कितने नाम,
तू थी रंग-बिरंगी,
फल-फूलों से भरी-भरी,
तूने हम पर उपकार किया,
हमने बदले में क्या दिया ?
तुझसे तेरा रूप है छीना,
तुझसे तेरे रंग हैं छीने,
पर अब मानव है जाग गया,
हमने तुझसे ये वादा किया,
अब ना जंगल काटेंगे,
नदियों को साफ रखेंगे,
लौटा देंगे तेरा रंग रूप,
चाहे हो कितनी बारिश और धूप।

-सिद्धि वाशिष्ठ, हिसार

अपना घर सबसे प्यारा

एक चिड़िया के बच्चे चार,
घर से निकले पंख पसार।
पूरब से पश्चिम को जाएं,
उत्तर से फिर दक्षिण को आएं।
घूमघाम जब घर को आएं,
मम्मी को एक बात सुनाएं।
देख लिया हमने जग सारा,
अपना घर है सबसे प्यारा।

- दीपिका बिश्नोई, बीकानेर

कली

हरी डाल पर लगी हुई थी,
नन्ही सुन्दर एक कली।
तितली उससे आकर बोली,
तुम लगती हो बड़ी भली।

अब जागो तुम आँखें खोलो,
और हमारे संग खेलो।
फैले सुंदर महक तुम्हारी,
महके सारी गली गली।

कली छिटककर खिली रंगीली,
तुरंत खेल की सुनकर बात।
साथ हवा के लगी भागने,
तितली छूने उसे चली।

- शिक्षा बिश्नोई
श्रीविजयनगर

शान से हो शानदार कमाई तो क्या कहना

अन्य कलाओं की तरफ ज्वेलरी डिजाइनिंग भी एक कला है, जिसमें छात्रों को डिजाइनिंग की बारीकियों के साथ–साथ ज्वेलरी बनाने की कला को भी सिखाया जाता है। वह ज्वेलरी डिजाइनर ही होता है, जो ज्वेलरी के नये पैटर्न एवं स्टाइल की प्लानिंग करता है। कई बार उसे ग्राहक की मांग को ध्यान में रखते हुए समय सीमा के अंदर डिजाइन तैयार करना होता है। पहले ज्वेलरी डिजाइनिंग प्रोफेशन में वही लोग आते थे, जिनका बैकग्राउंड ज्वेलरी का धन्धा था, लेकिन अब परिस्थितियाँ बदल रही हैं। अन्य क्षेत्रों के लोग भी इस क्षेत्र में आ रहे हैं। अगर आप की रुचि डिजाइनिंग क्षेत्र में जाने की है, तो ज्वेलरी डिजाइनिंग आपके लिए बेहतर कैरियर विकल्प हो सकता है। भारत एक ऐसा देश है जहाँ लोगों में ज्वेलरी के प्रति सबसे ज्यादा क्रैज रहता है। इस वजह से ज्वेलरी इंडस्ट्री भी देश की अर्थव्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा है। ज्वेलरी डिजाइनर पहले सिर्फ हाथ से ही गहने की डिजाइनिंग करते थे, परन्तु आजकल तो कम्प्यूटर एडेड डिजाइन (सीएडी) सॉफ्टवेयर का उपयोग करके भी ज्वेलरी डिजाइनर की जा रही है। इसके अलावा और आधुनिक टेक्नोलॉजी व मशीनों से भी गहनों की डिजाइनिंग होती है।

अवसरों का भंडार –

ऐसा कहा जाता है कि भारतीय ज्वेलरी डिजाइनिंग 5,000 से अधिक वर्षों की एक प्राचीन और ऐतिहासिक परम्परा है। ज्वेलरी डिजाइनर किसी बड़े ब्रांड में एक कर्मचारी के रूप में या किसी निजी कार्य में काम कर सकते हैं। भारत सोने का सबसे बड़ा उपभोक्ता है और यह इंडस्ट्री लाखों लोगों को रोजगार देती है। विश्व में 20 प्रतिशत सोने की खपत भारत में होती है। भारतीय आभूषण बाजार में बड़े–बड़े देशी और विदेशी ब्रांड्स जैसे तनिष्क, स्वरोवस्की, डी बीयर्स, डी डमास, डिफनीज, आईटीसी लाइफ स्टाइल, गीतांजली ज्वेलरी प्राइवेट लिमिटेड बहुत तेजी के साथ अपनी जगह बना रहे हैं। ज्वेलरी डिजाइनिंग एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें भारत और विदेशों में व्यवसाय के बहुत अवसर हैं।

संतोषजनक कमाई –

इस क्षेत्र मे कमाई अनुभव और कौशल पर निर्भर करती है। शुरूआत में, एक ट्रेनी आभूषण डिजाइनर 20,000 रुपये से 20,000 रुपये प्रतिमाह वेतन की उम्मीद कर सकते हैं। अनुभव हो जाने के बाद आप 50,000 से 60,000 प्रतिमाह आराम से कमा सकते हैं। आप रिटेल स्टोर में, कमीशन के आधार पर भी काम कर सकते हैं और कमा सकते हैं। फ्रीलांसिंग के माध्यम से भी अच्छी कमाई हो जाती है।

शैक्षणिक योग्यता –

इस क्षेत्र में अपना भविष्य बनाने के लिए आपको किसी स्ट्रीम से इंटरमीडिएट होना जरूरी होता है और छात्रों को क्रिएटिव होना मूल्यवान रत्नों की पहचान होना, ग्रेडिंग तथा इससे जुड़े पहलू ही उसकी योग्यता माना जाता है। ज्वेलरी डिजाइनिंग में बहुत से कोर्स उपलब्ध हैं। इसमें सर्टिफिकेट एवं वोकेशनल कोर्स से लेकर डिप्लोमा, डिग्री, पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा, डिग्री एवं मास्टर कोर्स आजकल प्रचलन में हैं। इन कोर्स के माध्यम से छात्रों को बहुमूल्य धातुओं के इस्तेमाल से लेकर हीरे तथा अन्य रत्नों की जानकारी व उनके प्रयोग के बारे में भी सिखाया जाता है। इसके अलावा छात्र ज्वेलरी डिजाइनिंग में ही ग्रेजुएट या पोस्ट ग्रेजुएट डिग्री और डिप्लोमा कोर्स कर सकते हैं।

विभिन्न प्रकार के कोर्सेस –ज्वेलरी डिजाइनिंग में बहुत से डिग्री, डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कोर्सेस कराये जाते हैं आप अपनी आपश्यकता के अनुसार इन डिग्री, डिप्लोमा या सर्टिफिकेट कोर्सेस का चुनाव कर सकते हैं।

सर्टिफिकेट –

- कलर्ड जेमस्टोन आइडेंटिफिकेशन
- बेसिक ज्वेलरी डिजाइन
- कैड फॉर जेम्स एंड ज्वेलरी
- डायमंड आइडेंटीफिकेशन एंड ग्रेडिंग

डिप्लोमा कोर्सेस –

- डिप्लोमा इन ज्वेलरी डिजाइन एंड जैमोलॉजी
- ज्वेलरी मैनुफैक्चरिंग
- एडवांस ज्वेलरी डिजाइन विद कैड

डिग्री कोर्सेस –

- बैचलर ऑफ ज्वेलरी/एक्सेसरीज डिजाइन
- बीएससी इन ज्वेलरी डिजाइन
- मास्टर्स डिप्लोमा इन ज्वेलरी डिजाइन एंड टेक्नोलॉजी

प्रमुख संस्थान

- नेशनल इंस्टीटयूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी, दिल्ली, वेबसाइड : nift.ac.in
- इंडियन इंस्टीटयूट ऑफ जेम्स एंड ज्वेलरी, जयपुर, वेबसाइड : www.iigjjaipur.com
- इंडियन इंस्टीटयूट ऑफ ज्वेलरी, मुम्बई : वेबसाइड : www.iij.net.in
- एसएनडीटी विमन्स यूनिवर्सिटी, मुम्बई : वेबसाइड : www.mu.ac.in
- पर्ल एकेडमी ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी, जयपुर : वेबसाइड : www.pearlacademy.com
- ज्वेलरी डिजाइनिंग इंस्टीटयूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी, दिल्ली, वेबसाइड : www.jdinstitute.com

–**हरिनारायण**, बीकानेर

दुर्लभ मनुष्य तन

यह तन तुने दुर्लभ पाया, कोटि जन्म भटका जब पाया,
इसको तू बिरथा मत खोयो, पल-पल छीन-छीन भक्ति कमाओ।
"गर्भवास में कवल किया था, कवल पलट हरि विमुख होवे।"

हे मानव तू माँ के गर्भ में उल्टा लटका था। तब उस असहनीय पीड़ा में तूने परमपिता परमात्मा मालिक से वादा किया था कि मुझे इस जठराग्नि से बाहर निकालो, मैं पल-पल तुम्हारा सुमरिन करूँगा। बाहर निकल तू हरि से विमुख होकर ऐसे मकड़जाल में फंस गया जैसे मकड़ी बहुत सुंदर जाल बनाती है और अपना ही रास्ता बाहर निकलने का बंद करके प्राण त्याग देती है। ऐसे ही हे मानव तू जाल में बंधकर प्रभु को भूला बैठा है।

बंधे तुम गाढ़े बंधन आन, बंधे तुम गाढ़े बंधन आन।
पहला बंधन पड़ा देह का, दूसरा त्रिया जान।
तीसरा बंधन पुत्र विचरो, चौथा नातिजान।
नाति के कई नाति होवे, फिर कहो कौन ठिकान।
मरे बिना तुम छुटो नाहि, जीते ही धर सुनो न कान।

हे मानव तू भूल गर्भ में पड़कर कैसी पूजा-इबादत में लगा है, सब संतों ने किया बखान-

भूलि दुनियां 'पाहण' पूजै बैफरमाया खुदाई,
गुरु चेले के पाये लाग देखो लोग अन्यायी।
चढ़-चढ़ भीते मड़ी मसीतै क्या उलबंग पुकारो,
कारण खोटा करतब हीणा, थारि खाली पड़ी नमाजूं।
कंकड पत्थर जोड़कर मस्जिद लई बनाय,
तामै मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।
वस्तु कहीं, खोजे कहीं, कैहि विधि आवै हाथ,
वस्तु अगर चाहिए तो भेदि लिजै साथ।

श्री गुरु जम्भेश्वर जी महाराज की सबदवाणी- गंगा, यमुना बहै सरस्वती, कोई-कोई न्हावै 'बिरला जति' बिजली के चमके ज्यूं छीन में जाय छीन में आय। सहज शून्य में रहे समाय, न यो गावै न गवावै स्वर्ग जाते बार न लावै, सतगुरु ही ऐसा तत्व बतावै, युग-युग जीवै बहुरि न आवै।

इस देव दुर्लभ देहि में ही गंगा, यमुना, सरस्वती मानसरोवर, हरिद्वार है। हरि से मिलने का रास्ता दुर्लभ मानव तन से ही होकर जाता है।

"परमात्मा मिलता है, जीते जी मिलता है, इसी मनुष्य शरीर में मिलता है।"

इस दुर्लभ मनुष्य शरीर की महता को समझो। बचा हुआ बहुमूल्य समय निरर्थक न चला जाये। वरना पछताना ही शेष रहेगा।

-सुभाष बिश्नोई
गांव सैनीवास, हिसार मो. 9813216629

पर्यावरणं रक्षन्तु

पर्यावरण संरक्षण और टिकाऊ विकास

गतांक से आगे.....

लघु अवधि विकास -दीर्घकालिक प्रभाव

किसी भी उत्पादवादी विकास मॉडल में संसाधनों का दोहन होना जाहिर सी बात है। ऐसी परियोजनाओं के लाभ को हम सीधा-सीधा मौद्रिक लागत और परिणाम से परिकलित कर लेते हैं। इस बात का संयोग बहुत कम ही बनता है कि हम पर्यावरणीय कीमत एवं सामाजिक कीमतों को इसमें कभी जोड़ते भी हैं, परन्तु सबसे अहम बात ये है कि नुक्सान जो पहुंचता है वह हमेशा के लिए हो जाता है, और उन प्राकृतिक स्थायी लाभों का फायदा आने वाले समय में आपको और आपके बच्चों को कभी नहीं मिलता। जैसे किसी बाँध की एक उम्र आंकी जाती है जब तक हमें उससे मौद्रिक फायदा मिलता रहेगा, लेकिन उस फायदे के लिए हमें उस नदी और उस पर निर्भर प्राकृतिक लाभों का त्याग अनंतकाल के लिए करना पड़ता है। कोयले आधारित तापीय विद्युत घरों की उम्र लगभग 30 साल आंकी गई और ये भी माना जा चुका है कि कोयला लम्बे अरसे तक धारणीय ऊर्जा स्रोत नहीं है और इसका प्रभाव वायुमंडल एवं स्थानीय जल स्रोतों पर अतिविशाल पड़ता है। लेकिन हम उस कोयले आधारित बिजली पर अगर निर्भर करते हैं तो सबसे पहले अपने पुराने घने जंगलों का बलिदान देना पड़ता है। उन जंगलों और कोयले निहित जमीनों से हमारे निर्भर लोगों को जड़ से उखाड़ना पड़ता है और उनकी आजीविका की लागत बढ़ जाती है। उसके दुष्प्रभाव तो वो झेलते ही है, साथ ही स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उस कोयले को बिजली घर तक पहुचाने में और फिर बिजली घरों से पर्यावरण और वहां के लोगों के आजीविका एवं स्वास्थ्य पर बहुत प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और सिर्फ 30 साल की बिजली के लिए हम अपने सदिओं पुराने जंगल, नदियों का और संपन्न सभ्यताओं का अनंतकाल के लिए बलिदान दे देते हैं।

उदाहरण के लिए हम सोन नदी के बहाव क्षेत्र की बात ही कर लेते हैं। 784 कि.मी. लम्बी सोन नदी की उत्पत्ति होती है मध्य प्रदेश से और ये उत्तर प्रदेश से होते हुए बिहार में गंगा में जाकर मिलती है। रिहंट, कनहर, कोयल नदियां इसकी मुख्य उपनदियों में से है। 1950 के बाद से सोन बहाव क्षेत्र में कई उद्योग आये जिसमें थर्मल पॉवर प्लांट प्रमुख रहे, रिहंट बाँध (1962) इन्द्रपुरी बराज (1968), बाणसागर बाँध (2008) जैसे कई बड़े अभियांत्रिकी संरचनाएं विकसित हुई, जिन्होंने सोन के जल का अबाध रूप से दोहन करना शुरू किया और आज भी कई ऐसे उद्योग विचाराधीन हैं। फरवरी, 2014 में केंद्रीय अंतर्देशीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान, कोलकाता ने सोन नदी पर एक अनुसन्धान रिपोर्ट प्रकाशित किया। उस रिपोर्ट में पिछले 36 सालों के आकड़ों के विश्लेषण के बाद ये पाया गया कि सोन नदी का औसतन वार्षिक अपवाह सिर्फ 5.16% ही रह गया है और ये 'गंभीर परिवर्तित' (Critically Modified Stage F) स्थिति में है। सोन को सिर्फ 'साधारण परिवर्तित' स्थिति (Slightly Modified Stage C) में लाने के लिए 34.2% औसतन वार्षिक की जरूरत है। सोन नदी में मूल प्रजातिओं में से 20 प्रजाति अब पूरी तरह सोन से विलुप्त हो चुकी और प्रवाह में प्रबल बदलाव के कारण 14 अन्यस्थानीय विदेशी प्रजाति की मछलियों की उपस्थिति मिली है। कुछ ऐसा ही हाल भारत के अन्य

नदियों और उपनदियों की भी है। ऐसे में ये सवाल का जवाब हमें खुद ढूंढ़ना पड़ेगा कि उस 30 साल बाद क्या हमें वो जंगल, वो नदियां और वो सारे प्राकृतिक लाभ पूर्वकालीन स्वरूप में वापस मिल पायेंगे ? और क्या हम उनसे वो सारी सुविधाएं जो जीवन के लिए महत्वपूर्ण है ले पाएंगे ?

इसी प्रभाव को कम करते हुए, पर्यावरण के संतुलन को बरकरार रखते हुए और ये सुनिश्चित करते हुए कि हमारा पर्यावरण का दोहन इतना भी न हो कि वो अपने विशिष्ट गुण ही खो बैठे और आने वाले समय में उसका लाभ हमारे आने वाली पीढ़ियों को भी मिले और ना आज की अपनी जरूरतों के लिए किसी और का नुक्सान करे, ऐसे समावेशी विकास को ही हम टिकाऊ विकास मान सकते है।

टिकाऊ विकास के घटक

टिकाऊ विकास को पर्यावरण संरक्षण की दृष्टिकोण से देखने के लिए पारिस्थितिकी तंत्र के 3 महत्वपूर्ण सिद्धांतों को समझना बहुत जरूरी है–

1. कोई भी जीव अधिक से अधिक संख्या में उत्पादन करने की क्षमता रखता है।
2. इस उत्पादन क्षमता का सीमित समय, जगह एवं ऊर्जा से एक निरन्तर टकराव चलता रहता है।
3. किसी भी पारिस्थितिकी तंत्र का Resilience यानि अपने क्षति वाली स्थिति से वापस लौटने की क्षमता जैव विविधता पर निर्भर करती है।

इन 3 सिद्धांतों को अगर हम ध्यान में रखें तो हमें पहली बात अपनी जनसंख्या को नियंत्रित करना पड़ेगा और संसाधनों की खपत को कम करना पड़ेगा। हम किसी एक व्यक्ति या किसी एक समाज की जरूरतों पर आधारित विकास को टिकाऊ नहीं मान सकते। टिकाऊ विकास की आधारशीला है सम्पूर्ण पारिस्थितिकी तन्त्र के integrity को संरक्षित करके चलने की। तब हम मनुष्य, पेड़, नदियां, जंगल, पहाड़ और सभी जीव जन्तुओं को हमारे ही तन्त्र का एक हिस्सा मानते हैं एवं उसकी रक्षा करने को अपने जीवन की रक्षा समझकर करते हैं क्योंकि हम सब इससे जुड़े हुए हैं।

अब हमारे पास टिकाऊ विकास को प्राप्त करने के लिए पर्यावरण संरक्षण के अनुसार लक्ष्य हैं: पहला पारिस्थितिकी तन्त्र के integrity को बरकरार रखने की जरूरत और दूसरा जैव विविधता की रक्षा करने की जरूरत और इन लक्ष्यों को पूरा करने के लिए सबकी सहभागिता बहुत महत्वपूर्ण है। हम सब उस पृथ्वी के नाजुक तन्त्र से जुड़े हुए हैं। इसमें सिर्फ एक समाज या जिला या राज्य ही नहीं सम्पूर्ण विश्व के देशों को प्रतिबद्ध करने की बात हैं और ये दोनों ही लक्ष्य economist मॉडल से बहुत अलग है।

अब जब हम इस विकास को पूरे तंत्र से जोड़कर देखेंगे तब हमें सामाजिक दृष्टिकोण को भी शामिल करना होगा। गरीबी के बढ़ने से या फिर ग्रामीणों की आजीविका को नुक्सान पहुंचाने से पर्यावरणीय क्षति भी बढ़ती है। इसका प्रमुख कारण है विस्थापित परिवार जंगलों, जीव जन्तुओं एवं सीमान्त इलाकों पर ज्यादा दबाव उत्पन्न करता है। औरतों पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और फलस्वरूप बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास पर भी प्रभाव पड़ता है। ऐसी स्थिति में social justice, social equity और gender equity-intergenerational equity से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि इसमें कल से ज्यादा हमारे आज से जुड़ा हुआ सवाल है।

आखिर में एक बात और कहना चाहूँगा कि टिकाऊ के लिए सिर्फ economist मॉडल, ecologist

मॉडल और social मॉडल के नजरिये से समझना या चर्चा करना ही काफी नहीं है। यह पूर्णत: हमारी नैतिकता, भावना, हमारी शिक्षा प्रणाली और एक बड़े स्तर पर प्रशासनिक एवम् राजनैतिक इच्छाशक्ति पर भी निर्भर है।

अक्षय ऊर्जा का विकास एवं कृषि क्षेत्र में संशोधनों से हमें खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने की हमें बेहद जरूरत है। जंगलों की रक्षा को प्राथमिकता मिलनी चाहिए और छोटे-छोटे वनों को जैव विविधता के पर्यावास के रूप में रक्षा करने की और उनको जोड़ने की आवश्यकताओं पर प्रशासनिक कोशिशें भी करनी पड़ेगी। Technology का उपयोग पर्यावरणीय प्रभावों को एवं संसाधनों के न्यूनतम नुक्सान पहुचाने पर होना चाहिए। ग्रामीणों का भी सम्पूर्ण विकास हो और संसाधनों का दुरुपयोग या अत्याधिक दोहन ना हो इसके लिए हमें छोटे प्रशासनिक संस्थानों जैसे पंचायत/ग्राम सभा को सशक्त करना होगा।

'पृथ्वी सभी मनुष्यों की जरूरत पूरी करने के लिए पर्याप्त संसाधन प्रदान करती है , लेकिन लालच पूरी करने के लिए नहीं 'ये भाव हम लोग बचपन से पढ़ते आ रहे हैं। टिकाऊ विकास के घटकों की बात करते है तो हमे गांधीजी की बातें याद आती है, भले ही हममें से कोई भी पूर्ण रूप से उनका अनुसरण आज के सन्दर्भ में शायद ही कर पाये। पर जरूरत है उस जीवनशैली को टिकाऊ विकास के आदर्शों के रूप में देखा जाए और धीरे-धीरे अपने जीवन में एवं अपने परिवार के जरिये समाज में एक मिसाल पेश किया जाए। गांधीजी की दूरदर्शिता और उनके सिद्धांतों का महत्व आज के समय में अच्छे से महसूस किया जा सकता है। उन्होंने संसाधनों के जरूरत के अनुकूल इस्तेमाल करने पर जोर दिया और खादी ग्रामोद्योग और ग्राम स्वराज को बढ़ावा दिया। हमारा समाज आदर्शवादियों के अनुयायी बनने के लिए हमेशा से तैयार है, लेकिन कमी है तो एक सिद्ध नेतृत्व की।

-**संदीप सैनी**, अर्बन एस्टेट, हिसार

छात्राओं हेतु जाम्भाणी संस्कार शिविर

सहर्ष सूचित किया जाता है कि गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी ग्रीष्मकालीन अवकाश में समाज की किशोरावस्था छात्राओं (13 वर्ष से 19 वर्ष आयु वर्ग) को श्री गुरु जम्भेश्वर की जीवनी, 29 धर्म नियमों, सबदवाणी, साखी, भजन, साहित्य, योग, प्रणायाम, हवन-यज्ञ, पद्धति, कैरियर सम्बन्धी मार्गदर्शन, व्यक्तित्व विकास व जाम्भाणी संस्कारों से अवगत कराने हेतु बिश्नोई सभा, सिरसा द्वारा साप्ताहिक आवासीय संस्कार शिविर का आयोजन श्री गुरु जम्भेश्वर मन्दिर-धर्मशाला, सिरसा में 16 जून से 22 जून, 2017 तक प्रस्तावित है। अत: इच्छुक छात्रायें अपने अभिभावकों के हस्ताक्षर व अन्य विवरण सहित सचिव बिश्नोई सभा, सिरसा को 25 मई, 2017 तक आवेदन कर सकती हैं। जन्मतिथि का प्रमाण-पत्र स्कूल से प्राप्त करके साथ लगायें। पहले आओ और पहले पाओ के आधार पर शिविर में प्रवेश मिलेगा। जिन्होंने पहले शिविर में भाग लिया हुआ है उनके प्रार्थना पत्र निरस्त कर दिये जाएंगे। अधिक जानकारी हेतु सभा सचिव (98120-96665), प्रचार सचिव (98960-52532) या कार्यालय से फोन नं. 01666-221958 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

-सचिव, बिश्नोई सभा, सिरसा

जम्भवाणी में युगबोध

युग शब्द का सामान्यत: अर्थ 'काल' से लिया जाता है। युग का कोई सुनिश्चित समय नहीं होता। प्राय: बोध का अर्थ 'बताना' के रूप में लिया जाता है। इसे चेतना के समानार्थक शब्द के रूप में ग्रहण किया जाता है। 'बोध' शब्द संस्कृत की 'बुध' धातु से बना है, जिसका अर्थ है 'जानना', समझना, ज्ञान बोध शब्द के अनेक पयार्यवाची शब्द है, जैसे प्रज्ञा, प्रतिभा, चेतना। 'चेतना जीवधारियों में रहने वाला वह तत्व है जो उन्हें निर्जीव पदार्थों से भिन्न बनाता है।' 'बोध' शब्द- 'इन्द्रयानुभूति के माध्यम से किसी वस्तु की स्थिति का परिज्ञान कराता है। जिसमें समय सापेक्षता अधिक रहती है।'

जिस युग में गुरु जाम्भोजी का आविर्भाव हुआ वह सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक दृष्टि से अव्यवस्था, अराजकता, असमानता, घोर अशांति, धर्म परिवर्तन, उथल-पुथल, जय-पराजय, पारस्परिक संघर्षों, युद्धों एवं सामंती वातावरण का युग था। ऐसे माहौल में सामाजिक मूल्यों में गिरावट, नैतिक पतन, सांस्कृतिक ह्रास अत्यधिक हुआ। इस अशांत तथा कोलाहलपूर्ण वातावरण में जन-जीवन शोषण व उत्पीड़न से ग्रस्त था। स्वार्थ परायणता, लूटमार, विदेशी आक्रमणों, अत्याचारों, धार्मिक, कट्टरता तथा जातीय संघर्ष से जनसामान्य चिंतित था। इससे मानवीय संवेदनाएं, दया-धर्म का मर्म सब तिरोहित हो रहे थे। गुरु जम्भेश्वर को आज से 500 वर्ष पूर्व ही इन समस्याओं का आभास था। गीता में श्रीकृष्ण भगवान ने कहा भी था कि जब-जब धर्म की हानि होती है तब-तब मैं धर्म की रक्षा के लिए जन्म लेता हूँ।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

भारतीय संस्कृति का ऐसा क्षरण देखकर भगवान विष्णु ने गुरु जम्भेश्वर के रूप में पीपासर की मरू भूमि में जन्म लिया। विसंगतियों से मनुष्य को बचाने के लिए श्री जम्भेश्वर ने बिश्नोई पंथ की स्थापना की।

गुरु जम्भेश्वर ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते थे जो वर्ग-विहीन तथा ऊँच-नीच की कुलषित भावना से रहित हो, जहां सभी लोगों के साथ समानता का व्यवहार हो, उनकी दृष्टि में मानव सेवा और मानव धर्म विश्व का सबसे श्रेष्ठ धर्म है और अपने ब्रह्ममय होने के विषय में प्रमाण देते हुए कहते हैं कि मैं स्वयं विष्णु रूप में हूँ :-

'नां मेरे माया न छाया रूप न रेखा,
बाहरि भीतरि अगम अलेखा।'

गुरु जम्भोजी ने परमात्मा के विष्णु नाम को अधिक महत्व दिया और कहा विष्णु नाम स्मरण के द्वारा अनेक प्रकार के विकारों एवं अवगुणों से छुटकारा पाया जा सकता है। विष्णु के नाम स्मरण में अनंत गुण हैं - **'विसन विसन तूं भणरे प्राणी, विसन भणता अनंत गुणूं।'**

मध्यकाल में गुरु जाम्भोजी ने निर्गुण और सगुण भक्तिधारा का समन्वय करके सगुणोन्मुखी निर्गुण भक्ति को प्रोत्साहन देकर सगुण तथा निर्गुण के भेदभाव को समाप्त कर दिया। उन्होंने कहा सगुण रूप में मैं स्वयं विष्णु हूँ और निर्गुण रूप में ईश्वर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त है जैसे - **'तिल मां तेल पोहप मां वास। पांच तंत मां लियो परगास।'**

गुरु जम्भेश्वर जी कहते हैं सांसारिक प्राणी परमात्मा की खोज तीर्थ स्थानों में करने का प्रयत्न करता है। परन्तु जाम्भोजी कहते हैं- **'अड़सठ तीर्थ हिरदा भीतर बाहर लोका चारूं।'**

इस युग में पशुओं की हिंसा होती थी। हिंसक प्रवृत्ति के दुष्ट मानव उनकी हत्या तक करते थे। गुरु जी ने निरीह जीवों पर बल प्रयोग करने वालों को फटकार लगायी, और कहा- **'जीवां ऊपरि जोर करी जै। अंतिकाल हुयसी भारी।'**

विभिन्न तर्कों द्वारा गुरु जाम्भोजी ने पशु हिंसा रोकने पर बल दिया उन्होंने कहा गाय की हिन्दू समाज में पूजा होती है। इसमें 33 करोड़ देवी-देवता निवास करते हैं,

जिस कारण उसकी पूजा-अर्चना होती है। महापुरुष पैगम्बर ने यह विधान कहां बनाया है कि तुम निरीह जीवों की हत्या करो।

गुरु जाम्भोजी कहते हैं कि आज का युग भौतिकतावादी युग है। इस युग में पैसा सर्वोपरी हो गया है। मानवीय मूल्य नष्ट होते जा रहे हैं। स्वार्थ की भावना पनपने लगी है। मनुष्य बड़े से बड़ा अपराध करता जा रहा है। सब कुछ पाकर भी मनुष्य असंतुष्ट है, ऐसे में संस्कारों, मानवीय मूल्यों तथा नैतिकता की आवश्यकता है। गुरु जी ने मनुष्यों के नैतिक उत्थान और उच्च आदर्शों के लिए संतों के ज्ञानदायक उपदेश को सर्वोपरी बताया और कहा कि भौतिक वस्तुओं का अत्याधिक प्रयोग होने से प्राकृतिक संसाधनों का अधिकाधिक दोहन हो रहा है। गुरुजी को सदियों पहले इस स्थिति का बोध हो गया था तभी तो उन्होंने कहा- '**कांय काटी बन रायो।**' अर्थात् हरे वृक्ष को काटना अपराध ही नहीं पाप भी है।

गुरु जाम्भोजी ने जिस समय बिश्नोई पंथ की स्थापना की उस समय राजस्थान में भीषण अकाल पड़ने से गुरु जी ने पेड़-पौधों व जीव जन्तुओं की बहुत सेवा की थी क्योंकि वे जानते थे कि मनुष्य का अस्तित्व बनाये रखने के लिए पर्यावरण संरक्षण जरूरी है। तभी से वे इस महान कार्य में जुट गये थे तथा अपने शिष्यों व अनुयायियों को जीव-जन्तुओं और पेड़-पौधों की रक्षा का उपदेश देते थे। खेजड़ली का बलिदान एक विश्वविख्यात घटना है, जहां बिश्नोई समाज के नर-नारी, बूढ़े, जवान 363 लोगों ने पेड़ों को बचाने के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया।

जलवायु की शुद्धता हेतु जाम्भोजी ने नित्य हवन करने का उपदेश दिया। बीस मिनट का शुद्ध घी से हवन करने से अन्दर और बाहर का वातावरण शुद्ध होगा। पूरी जाति की शारीरिक शुद्धता हेतु प्रात:काल स्नान करने का उपदेश दिया था- '**प्रातः स्नानं समाचरेत्।**' अर्थात् प्रात:काल स्नान करने से मनुष्य के रात्रि के पाप और स्वप्न दोष नष्ट हो जाते हैं।

आजकल समाज में भ्रष्टाचार, हिंसा और अराजकता का बोलबाला है। गुरु जाम्भोजी ने इस भाव को अभिव्यक्त करते हुए लिखा है- '**जां जां दया न धर्मू, तां तां बिकरम कर्मू।**' जैसा कर्म करोगे वैसा ही फल मिलेगा। उन्होंने कथनी और करनी की एकरूपता पर बल देते हुए कहा कि प्रत्येक कार्य को सर्वप्रथम स्वयं करना चाहिए फिर दूसरे को उसके विषय में उपदेश देना चाहिए।

पहलूं किरिया आप कुंमाइयै, ते अवरां न फुरमाइयै॥

गुरु जाम्भोजी ने गुरु की महत्ता स्वीकार करते हुए कहा- उस युग में अनेक प्रकार के गुरु थे। सतगुरु होना बड़ा कठिन था। उन्होंने कहा जिन लोगों ने सच्चे गुरु की पहचान नहीं की उनको ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त नहीं होता। ऐसे लोगों के गले में जन्म-मृत्यु का चक्कर पड़ा रहेगा। इस भौतिक जगत में गुरु प्रदत्त ज्ञान के द्वारा ही मानव को आत्म संतुष्टि होती है। उस गुरु की सेवा करो जो आपको नाव से भवसागर से पार करा सकता है उन्होंने सतगुरु की महिमा बताई जो समाज के लिए बड़ी हितकारी है और कहा-

सतगुरु ऐसा तंत बतावै, जुगि जुगि जीवै जलंभि न आवै।

गुरुवाणी को सुनो और जीवन में उतारो, जिससे आपका कल्याण होगा।

गुरु जाम्भोजी ने कर्म को ही सर्वश्रेष्ठ माना है। उत्तम कुल में उत्पन्न होकर भी यदि व्यक्ति अच्छे कार्य नहीं करता तो वह कुलीन नहीं है, जो समाज कल्याण के कार्य करता है वह कुलीन है, वही श्रेष्ठ है।

गुरु महाराज मानव में दया की भावना का होना आवश्यक बताते हुए कहते हैं कि जहां दया नहीं वहां ईश्वर भी नहीं है, मुक्ति भी नहीं है और 'अहिंसा परमोधर्म:' का संदेश देते हुए कहा कि किसी भी समस्या का समाधान हिंसा नहीं बल्कि अहिंसा है। अहिंसा से किसी के दिल को बड़ी सरलता से जीता जा सकता है। गुरु जाम्भोजी कहते हैं उस समय संसार में ऊंच-नीच, छुआछूत, भेदभाव, छोटे-बड़े की भावना आदि थी और गुरु जाम्भोजी इन सामाजिक कुरीतियों को जड़ से नष्ट करना चाहते थे। कोई भी व्यक्ति जाति से बड़ा नहीं होता, न कुल परम्परा से मनुष्य अपने सत्कर्मों व आचार से बड़ा होता है। उनकी दृष्टि में सभी

व्यक्ति एक समान हैं– '**उत्तम कुली का उत्तम न होयबा, कारण क्रिया सारूं।**'

आर्थिक विषमताओं पर दृष्टि डालते हुए दान की महत्ता स्वीकार की कि हमें दान देना चाहिए लेकिन किसको देना चाहिए, यह भी हमें ध्यान में रखना चाहिए। वे कहते हैं – '**कुपात्र कूं दान जु दीयो, जाणै रैण अंधेरी चोर जु लीयो। दान सुपाते बीज सुखेती, अमृत फूल फलीजै।**'

मध्यकाल में नारी के प्रति संतों के अलग-अलग दृष्टिकोण थे परंतु जाम्भोजी स्त्री के प्रति पूज्य भाव रखते थे। गुरु जी ने स्त्रियों में चेतना का विस्तार किया। उन्हें पुरुषवादी कट्टरता व अहंकार से उबारा और उनको कुमार्ग से दूर रहकर सत्मार्ग पर चलकर जीवन- यापन करने का संदेश दिया। साथ ही जीवन की क्षणभंगुरता पर दृष्टि डालते हुए हमें बताया कि मनुष्य जीवन मानव को सत्कर्मों से मिलता है। जीवन का समय निरंतर घटता जा रहा है, इसलिए मनुष्य को समय रहते अपने जीवन में सद्मार्ग पर चलना चाहिए। उन्होंने श्रीकृष्ण के चरित्र को मानव जाति का आदर्श माना।

अंत में कह सकते हैं कि गुरु जाम्भोजी ने समाज के सभी वर्गों को जोड़ा, जाति बंधन से ऊपर उठकर सभी जातियों को बिश्नोई मत में दीक्षित किया और कहा कि पाप से घृणा करो पापियों से नहीं। उनका सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक युगबोध 'सबदबाणी' में निहित है। उन्होंने 29 धर्म नियमों का प्रतिपादन किया जो मानव जाति के लिए कल्याणकारी हैं। यही कारण है कि गुरु का अमिट प्रभाव लोगों पर पड़ा और लोग उनके अनुयायी बन गए। उन्होंने मनुष्य के नैतिक उत्थान और उच्च आदर्शों के लिए संतों के ज्ञानदायक उपदेशों को सर्वोपरि बताया। गुरु जाम्भोजी की युग चेतना का मुखर स्तर कई रूपों में परिभाषित हुआ है। अत: भक्तिकाल की धारा में गुरु जम्भेश्वर के विचार अमूल्य निधि के रूप में चमक रहे हैं।

–पूनम कुमारी
शोधार्थी (हिन्दी विभाग)
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

जम्भवाणी की शिक्षा

1. गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु महादेवा,
 गुरु बिन ज्ञान कोई नहीं देगा।
 गुरु, मात और पिता का करो सम्मान,
 जम्भवाणी हमें दे रही यही शिक्षा।
2. जात-पात का चक्कर छोड़ो,
 नर और नारी का भ्रम छोड़ो।
 नर और नारी सभी जन हैं, प्रभु की सन्तान,
 करो विष्णु-विष्णु का जाप। जम्भवाणी हमें....
3. मार-पीट गाली गलौच छोड़ो,
 वाद-विवाद, तर्क-वितर्क छोड़ो।
 दो सदा सत्य का साथ,
 जम्भवाणी हमें दे रही है यही शिक्षा।
4. मांस-मदिरा, बीड़ी सिगरेट छोड़ो,
 हिरण, गाय, बकरी को मारना छोड़ो।
 अहिंसा का मंत्र अपनाओ,
 सुखी जीवन जीना सीखो। जम्भवाणी हमें....
5. पृथ्वी की शान, वृक्षों को काटना छोड़ो,
 नए पौधे लगाकर उनका संरक्षण करना सीखो।
 पर्यावरण को स्वच्छ बनाओ,
 जम्भवाणी हमें दे रही यही शिक्षा।
6. चोरी, झूठ रिश्वतखोरी छोड़ो,
 मेहनत की रोटी खाना सीखो।
 हाथों करो टबाई, हृदय में होवे राम नाम,
 जम्भवाणी हमें दे रही यही शिक्षा।
7. सुपात्र को दान देना है सार्थक,
 कुपात्र को दिया दान है व्यर्थ।
 सम्पत्ति का दसवां हिस्सा करो दान,
 जम्भवाणी हमें दे रही यही शिक्षा।
8. प्रात:काल स्नान कर हवन करो,
 सुगंधित शुद्ध सामग्री अग्नि में डालो।
 जिससे आसपास का वातावरण स्वच्छ बनाओ,
 जम्भवाणी हमें दे रही यही शिक्षा।
9. अड़सठ तीर्थ हृदय माही, बाहर लोकाचार,
 बाह्य आडम्बर सब छोड़ो, हृदय में रखो सुविचार।
 नाम जप की महिमा अपार, करो विष्णु-विष्णु का जाप,
 जम्भवाणी हमें दे रही यही शिक्षा।
10. सांझ-सवेरे करो ईश्वर वन्दन, गुरु के गुण गाओ,
 माया मोह त्याग कर मन को भजन में लगाओ।
 काम, क्रोध, लोभ, मोह हैं नरक के द्वार,
 करो आरती जय जम्भेश्वर की जीवन सफल बनाओ।
 जम्भवाणी हमें दे रही यही शिक्षा।

–अनिला बिश्नोई, सैक्टर 16-17, हिसार

आस्था और श्रद्धा का अनोखा संगम: तीर्थ सरोवर जाम्भा मेला सम्पन्न

बिश्नोई समाज का प्रमुख तीर्थ स्थल जाम्भोलाव मेला चैत्र अमावस्या 28 मार्च, 2017 को सम्पन्न हुआ। चैत्र बदि चतुर्दशी को ही भारी संख्या में श्रद्धालुओं का आना प्रारम्भ हो गया था। मेले की पूर्व सन्ध्या को विशाल जागरण हुआ जिसमें सन्तों व अन्य गायक कलाकारों ने आरती, साखी, भजन व अन्य प्रस्तुतियां दी। मेला परिसर में विभिन्न प्रकार की व्यवस्था को बनाये रखने के लिए मेला कमेटी, सेवक दल और पुलिस प्रशासन जगह-जगह पर मुस्तैद था। मेला कमेटी की ओर से इस बार सरोवर में नहाने और पवित्र मिट्टी निकालने के लिए विशेष व्यवस्था की गई थी, वहीं स्वच्छता को लेकर भी मेले से एक दिन पहले ग्राम वासियों और मेला कमेटी के लोगों द्वारा मेला परिसर और सरोवर की आगोर से साफ सफाई की गई।

28 मार्च अमावस्या को प्रात: ब्रह्ममुहूर्त में भारत वर्ष से आये हुए बिश्नोई श्रद्धालुओं ने तीर्थराज जाम्भा के पवित्र सरोवर में डुबकी लगाकर जाने- अनजाने में किए गए पापों को धोकर अपने तन और मन को स्वच्छ और निर्मल किया।सूर्योदय के साथ ही विशाल यज्ञ प्रारम्भ हुआ, जिसमें लोगों ने श्रद्धा से घी व नारियल की आहुतियां दी। मन्दिर प्रांगण में छोटा हवन भी चल रहा था तथा सन्तों व हजारों भक्तों ने गुरु जम्भेश्वर भगवान की वेदमय वाणी तथा मंत्रों से हवन हुआ। तदुपरान्त पाहल बनाया गया। मन्दिर में लोगों का दर्शनार्थ तांता लगभग प्रात: 4 बजे प्रारम्भ हुआ जो कि दोपहर बाद 4 बजे तक निरन्तर चलता रहा। निर्माणाधीन मंदिर के लिए भी बिश्नोई बन्धुओं ने बढ़-चढ़कर सहयोग दिया।

दिन में 12 बजे अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा एवं जाम्भोलाव धाम ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री हीराराम भंवाल एवं अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा के राष्ट्रीय संरक्षक आचार्य संत डॉ. गोवर्धनरामजी शिक्षा शास्त्री के आमगन पर विशाल धर्म सभा प्रारम्भ हुई। मंच संचालन अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के सचिव तथा जाम्भोलाव धाम ट्रस्ट के सचिव मास्टर रूपाराम कालीराणा ने किया।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए फलोदी विधायक मास्टर पब्बाराम बिश्नोई ने कहा कि दिल्ली में गुरु जाम्भोजी ने हासम-कासम की सहायता के लिए राज दरबार में अपनी वाणी को गुंजाया, उसी प्रकार गत 18-19 मार्च को दिल्ली के सबसे बड़े भवन विज्ञान भवन में

देश-विदेश के बड़े-बड़े विद्वानों के मध्य गुरु महाराज की वाणी गूंजी। गुरुजी के एक-एक शब्द को लोग सुनना व प्रेरणा लेना चाहते हैं। आपने आचार्य संत गोवर्धनरामजी को कहा कि आपके आदेश में नीले वस्त्र का गणवेश परिवर्तन कर बिश्नोई समाज के मन भावन रंगों में विद्यालय की गणवेश होगी। साथ ही राजस्थान सरकार ने सलमान प्रकरण के लिए उच्चतम न्यायालय का दरवाजा खटखटाया है। ये दोनों ही ऐतिहासिक कार्य हैं। आपने कहा कि जाम्भोलाव को चाार-चार हाईवे से जोड़ने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो चुकी है। आपने घोषणा की कि आगामी मेले तक यहां 15 लाख रुपये की लागत से भव्य शेड बन जायेगा। सरोवर तट के लिए भी कार्य किया जा रहा है।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के राष्ट्रीय प्रधान हीराराम भंवाल ने शिक्षा को लेकर अपनी बात रखी। भंवाल ने फलोदी जाम्भा में जल्दी ही शिक्षा के लिए नए आयाम स्थापित करने संबंधी विचार रखे। धर्म सभा को संबोधित करते हुए अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा के राष्ट्रीय संरक्षक आचार्य संत डॉ. गोवर्धनरामजी ने समाज में फैल रही विभिन्न कुरीतियों को लेकर सावधान और सजग रहने की बात कही। आपने कहा कि जिस समाज का निर्माण जम्भेश्वर भगवान ने किया व धरोहर प्रह्लाद पंथियों को सौंपी वह मर्यादा पांच सौ वर्षों से निरन्तर चली आ रही है। आपने वील्होजी का उदाहरण देते हुए कहा कि उस समय भी सन्तों को धर्म की रक्षा के लिए संघर्ष करना पड़ा था। आपने बलियों पर बंधी भगवी चादर के अपमान की ओर ईशारा करते हुए कहा कि यह जम्भेश्वर भगवान की प्रसादी की तरह होती है इसका अपमान नहीं करना चाहिये। धर्मसभा को योगी लालदासजी महाराज धवा, जोधपुर जिलाध्यक्ष नारायणराम डाबड़ी, महासभा उपाध्यक्ष हुकमाराम, लोहावट प्रधान भागीरथ बेनीवाल,

फलोदी प्रधान अभिषेक भादू, जिला परिषद सदस्य रावलराम जाणी, सत्यनारायण राव, अखिल भारतीय जीव रक्षा के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्रीराम सोऊ रामड़ावास, राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष शिवराज जाखड़, जोधपुर संभाग प्रभारी श्याम खीचड़, बेटी संस्थान के डायरेक्टर रामरख जाखड़, पंचायत समिति सदस्य किसनाराम उदाणी, दिनेश हरकाणी, विक्रम, भागीरथ बज्जु, कंवरलाल राव, गणेशराम भीकमकोर, मास्टर प्रकाश, सुरेश कुमार व अरमान कड़वासरा ने सम्बोधित किया।

सर्वप्रथम दिवंगत महन्त श्री रतिरामजी महाराज जाम्भोलाव व शहीद जगदीश बिश्नोई को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर मंच पर पूर्व आई.जी. उम्मेदाराम बिश्नोई, अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा के राष्ट्रीय महासचिव मांगीलाल बूड़ीया, पूर्व उप-प्रमुख गंगाराम कड़वासरा, महासभा, जाम्भोलाव धाम ट्रस्ट, अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा व सेवकदल के पदाधिकारी सहित समाज के गणमान्य लोग उपस्थित थे। हर वर्ष की भांति समाज की चहेती मासिक पत्रिका अमर ज्योति व जम्भ ज्योति के स्टाल लगाकर साहित्य प्रचार-प्रसार किया गया।

युवाओं ने जाम्भोलाव मेले में किया ऐतिहासिक रक्तदान

जाम्भोलाव मेले में अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा, जोधपुर के नेतृत्व में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। बिश्नोई समाज के जोधपुर के फलोदी स्थित सबसे बड़े पवित्र तीर्थ सरोवर जाम्भोलाव धाम, जाम्भा में भरे गये विशाल मेले में अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा, जोधपुर की ओर से मारवाड़ हॉस्पिटल, जोधपुर की देखरेख में आयोजित रक्तदान शिविर में बिश्नोई समाज के युवा महिला पुरुष ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हुए अपने रक्तदान के महत्व को जानते हुए दूसरों की जिन्दगी बचाने के लिए 201 यूनिट रक्त का दान किया। रक्तदान को लेकर बिश्नोई समाज के महिला

व पुरुषों में जबरदस्त उत्साह देखा गया। अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा के राष्ट्रीय संरक्षक आचार्य संत डॉ. गोरधनरामजी के सान्निध्य में राष्ट्रीय महासचिव मांगीलाल बूड़ीया के मुख्य आतिथ्य और प्रदेश अध्यक्ष शिवराज जाखड़ की अध्यक्षता में रक्तदान शिविर का विधिवत शुभारंभ किया गया।

कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अखिल भारतीय जीव रक्षा विश्नोई सभा के जिला सचिव ओमप्रकाश गोदारा, ओम बांगड़वा मतोड़ा, जिला प्रचार मंत्री प्रकाश पूनियां, भंवर खिलेरी राणेरी, सत्यनारायण, आउ अध्यक्ष रामकृष्ण मेहला, ओमप्रकाश बरजासर व उनकी पूरी टीम, फलोदी अध्यक्ष श्याम कच्छबाणी व उनकी टीम, बाप अध्यक्ष हरि माडपुरा व उनकी टीम, हनुमान अमराणी, ओसियां अध्यक्ष चुतराराम सियाग व उनकी टीम, लोहावट की टीम, अशोक खीचड़, सुनील लोल, सुरेश सारण छात्र नेता कुलदीप सुरपुरा, निहालचंद फलोदी, जैसलमेर सभा से श्रवण बिश्नोई, राधेश्याम पेमाणी सहित अनेकों कार्यकर्ता मुस्तैदी से लोगों को रक्तदान के प्रति प्रेरित किया और रक्तदान करवाते रहे।

पॉलीथिन मुक्त रहा मेला

जाम्भोलाव मंदिर और मेला बाजार पूर्ण रूप से पॉलीथिन और अन्य कचरे व गंदगी से मुक्त रहा। मेला परिसर में पर्यावरण प्रेमी खम्मुराम खीचड़ और उनकी टीम पूरी मुस्तैदी से अपने कर्तव्य का पालन करती दिखी। इस बार टीम खम्मुराम के साथ स्थानीय विद्यालय के सैकड़ों छात्रों ने भी स्वच्छ जाम्भा-स्वच्छ भारत अभियान में भाग लिया। स्वच्छता अभियान में दयाराम खीचड़, बगडुराम, बिड़दाराम, किसनाराम, हरीश भाम्भू, पूनम मांझू, प्रकाश पूनियां, ओमप्रकाश गोदारा, सुखराम जंवर, विजय सिंवर, मोनिका खीचड़, भंवरी कालीराणा सहित अनेकों सेवकों ने भाग लिया।

-रामप्रकाश बूड़ीया (8823929000)
रामनिवास हांणियाँ, जोधपुर (9982184241)

गुरु जम्भेश्वर मंदिर, आदमपुर का शिलान्यास

10 अप्रैल, 2017 को आदमपुर में चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई, संरक्षक, अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा ने गुरु जम्भेश्वर मन्दिर का शिलान्यास किया। स्वामी राजेन्द्रानन्द जी, हरिद्वार के सान्निध्य में आयोजित इस शिलान्यास समारोह की अध्यक्षता पूर्व संसदीय सचिव श्री दुड़ाराम जी ने की। इस अवसर पर उपस्थित श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए श्री कुलदीप सिंह बिश्नोई ने कहा कि मन्दिर हमारी आस्था एवं श्रद्धा के केन्द्र होते हैं। वर्तमान युग में गुरु जाम्भोजी के नियमों का प्रचार-प्रसार व पालन अत्यन्त आवश्यक है। श्री दुड़ाराम जी ने कहा कि गुरु जम्भेश्वर जी की शिक्षाओं में वर्तमान समय की सभी समस्याओं का समाधान समाहित है। आवश्यकता इस बात की है कि उन शिक्षाओं को धारण किया जाए। इस अवसर पर 4 से 9 अप्रैल, 2017 तक जम्भवाणी हरिकथा आयोजित की गई, जिसका वाचन स्वामी राजेंद्रानन्द जी द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री प्रदीप बैनीवाल, प्रधान, बिश्नोई सभा, हिसार व पूर्व प्रधान श्री सुभाष देहड़ू, अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा, जिला हिसार के प्रधान श्री सहदेव कालीराणा, श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान मन्दिर, आदमपुर पश्चिमी पाना के प्रधान श्री कैलाश चन्द्र ज्याणी, सरपंच अतर सिंह ज्याणी, पूर्व सरपंच श्री सुभाष चन्द्र ज्याणी, श्री कृष्णचन्द्र बैनीवाल व श्री कृष्ण भाम्भू (सेठी) तथा समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

-कृष्ण लाल बैनीवाल, आदमपुर

रतिया में गुरु जम्भेश्वर मंदिर का शिलान्यास

फतेहाबाद रोड रतिया में स्थित बिश्नोई धर्मशाला परिसर में पूर्व संसदीय सचिव व वरिष्ठ कांग्रेसी नेता श्री दूड़ाराम ने गुरु जम्भेश्वर मंदिर, रतिया का शिलान्यास किया। इस अवसर पर आए हुए समाज के गणमान्य व्यक्तियों को संबोधित करते हुए श्री दूड़ाराम ने कहा कि गुरु जम्भेश्वर भगवान ने जो हमें नियम दिए हैं, हमें उनका पालन करना चाहिए और सारा समाज एकजुट होकर समाज को आगे बढ़ाने का प्रयास करे। इस अवसर पर अपने प्रवचन करते हुए स्वामी राजेन्द्रानन्द जी महाराज ने कहा व्यक्ति को भगवान जम्भेश्वर जी के बताए मार्ग पर चलते हुए सच्चाई के मार्ग पर चलना चाहिए। जीवों की रक्षा करनी चाहिए, पर्यावरण को शुद्ध रखने के लिए पेड़ पौधे लगाने चाहिए। स्वामी जी ने कहा जो व्यक्ति जीवों की हत्या करता है वह पाप का भागीदार होता है। जीव हत्या घोर पाप है। उन्होंने कहा- पेड़-पौधे हमारे जीवन के लिए बहुत उपयोगी हैं, इनकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य बनता है। वहीं इस अवसर पर प्रधान रामस्वरूप बैनीवाल ने कहा यह भव्य मंदिर शीघ्र बनकर तैयार हो जाएगा।

इस अवसर पर श्री प्रदीप बैनीवाल, प्रधान बिश्नोई सभा, हिसार; श्री सहदेव कालीराणा, प्रधान महासभा शाखा, हिसार; श्री अनिल पूनिया, कोषाध्यक्ष, बिश्नोई सभा, हिसार; प्रमुख समाजसेवी श्री सतपाल गोदारा, नीमड़ी; श्री पुरुषोत्तम ढुकिया; श्री हंसराज नंबरदार; श्री पृथ्वीराज, सचिव; श्री भूप सिंह गोदारा, प्रधान बिश्नोई सभा, फतेहाबाद; श्री इंद्रजीत धारणिया, श्री राजेंद्र भाम्भू, श्री भजनलाल पूनिया, श्री हंसराज गोदारा, श्री हनुमान ज्याणी, श्री देवेंद्र जैलदार, श्री सुरजीत बिश्नोई व श्री रामस्वरूप सिहाग आदि समारोह में उपस्थित थे।

-रामस्वरूप बैनीवाल, रतिया

गुरु जाम्भोजी के जयकारों के साथ सोनड़ी मेला आयोजित

धोरीमनाः निकटवर्ती विष्णु धाम सोनड़ी ने 375वें विशाल जंभेश्वर मेले की अमावस्या की पूर्व संध्या पर आयोजित भगवान जाम्भोजी के जागरण में कुं कुं केरा चरण पधारो, की आरती के साथ सोनड़ी के महन्त स्वामी हरिदास महाराज एवं स्वामी रामानन्द महाराज के पावन सान्निध्य ने सोमराज मांजू एंड पार्टी के द्वारा भगवान जाम्भोजी की पांच आरती, पांच साखी की मनमोहक प्रस्तुतियों से पूरा मेला परिसर भगवान जाम्भोजी की जय-जयकार से गूंज उठा। रात्रि जागरण में अमावस्या की शुभ वेला में हजारों श्रद्धालुओं ने भगवान जाम्भोजी की जागरण का भरपूर आनंद लिया। देर रात तक भगवान जाम्भोजी के मंदिर में हजारों की संख्या में श्रद्धालु जय-जयकार करते हुए जागरण पंडाल में जागरण का आनंद लेते रहे।

विशाल यज्ञ एवं पाहल :

अमावस्या को प्रातः पवित्र शुभ वेला में सोनड़ी के महन्त स्वामी हरिदास महाराज एवं स्वामी रामानन्द महाराज के द्वारा भगवान जाम्भोजी की वाणी के 120 सबदों से पाहल बनाकर नशामुक्त जीवन जीने का संकल्प दिलाया गया। निज मन्दिर में 135 वर्ष से प्रज्ज्वलित अखंड ज्योति का दर्शन करके अपने जीवन को धन्य किया। श्रद्धालु अपने साथ में पशु पक्षियों के लिए बाजरी एवं गेहूं लेकर पक्षियों के लिए गर्मियों में जगह-जगह परिंडे लगाने के संकल्प के साथ भगवान जाम्भोजी से अपने जीवन में सुख शांति और सुकाल की कामना करते हुए बड़े आनन्दित एवं प्रफुल्लित नजर आ रहे थे।

बिश्नोई समाज के खुले अधिवेशन मे खुलकर हुई चर्चा : दिन में 1.00 बजे बिश्नोई समाज सेवा समिति सोनड़ी एवं श्री गुरु जंभेश्वर सेवक दल का खुला अधिवेशन हुआ, जिसमें सेवा भाजपा मंडल अध्यक्ष पुरखाराम मांजू ने कहा कि शिक्षा के बिना जीवन अधूरा है जब समाज पढ़-लिख जायेगा तो समाज की प्रगति को कोई नहीं रोक सकता। शिक्षा के बिना कोई भी किसी सरकारी योजना का लाभ नहीं उठा सकता और जीवन में

अनेक अवसरों से वंचित रह जाते हैं।

सोनड़ी के समाज सेवी गंगाराम सियाक ने कहा- इस आधुनिक युग में युवा लोग धर्म के रास्ते से भटक रहे हैं जो बड़ी चिन्ता का विषय है जब अपने धर्म की रक्षा नहीं कर पाये तो धर्म हमारी रक्षा नहीं करेगा। इसलिए व्यक्ति को हर समय धर्म का पालन करना होगा।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सोनड़ी के प्रधानाचार्य सुखराम खिलेरी ने कहा कि हम आधुनिकता की चकाचौंध में संस्कार भूल रहे हैं और आधुनिकता में अन्धे होते जा रहे हैं। उन्होंने अभिभावकों से आगाह करते हुए कहा कि अगर आप अपने बच्चों को कुछ बनाना चाहते हो तो अपने बालकों को तीन बुराइयों से बचाना होगा। मोबाइल, मोटरसाईकल और मनी का कम से कम उपयोग करने देना होगा। इनसे अगर अपनी सन्तान को बचा लिया तो उसको मंजिल प्राप्त करने से कोई नहीं रोक सकता।

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, सीआईडी खेताराम बिश्नोई ने कहा- आजकल विवाह शादियों में अनावश्यक खर्चा बढ़ रहा है जो बहुत गलत है। मंच संचालन अशोक

कुमार मांजू ने किया।

मेले मे जमकर हुई खरीददारी : मेले में आए श्रद्धालुओं ने जमकर खरीददारी की। किसानों ने अपने औजारों की तो महिलाओं ने सोने-चांदी व मनिहारी की खरीददारी की। गर्मी के शुरूआती तेवरों देखते हुए मेले में आए हुए सभी लोगों ने गोड़ा और पचपदरा की मिट्टी की मटकियों की खरीददारी की। इन मटकियों को मरुस्थल के लोग फ्रिज मानते हैं।

-गोविन्द बिश्नोई
धोरीमन्ना, सोनड़ी

समाजहित में प्रकाशित

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार (सत्र 2017-18) में प्रवेश हेतु सूचना

(केवल हरियाणा राज्य के मूल निवासियों के लिए प्रवेश सूचना)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में हरियाणा राज्य के मूल निवासियों के लिए बी.एससी. (कृषि)/कम्युनिटी विज्ञान (सत्र 2017-18) में प्रवेश हेतु आवेदन पत्र आमंत्रित:

ऑनलाइन आवेदन-पत्र फीस सामान्य श्रेणी 1000 रुपये और एस.सी./बी.सी. श्रेणी के लिए फीस 250 रुपये

ऑनलाइन आवेदन-पत्र भरने व प्रोसपैक्टस और अधिक जानकारी के लिए hau.ernet.in पर सम्पर्क करें।

डिग्री	**योग्यता**	**ऑनलाइन आवेदन -पत्र जमा करने की अंतिम तिथि**	**प्रवेश आधार**
बी.एससी. कृषि (ऑनर्स) (अवधि 4 वर्ष)	50% अंकों सहित 10+2 (फिजिक्स, केमिस्ट्री, बायोलॉजी/गणित या कृषि)	20 मई, 2017	18 जून 2017 को 10 बजे प्रवेश परीक्षा के आधार पर (सिलेबस-प्रोस्पैक्टस पेज नं. 83-89)
बी.एससी. कृषि (ऑनर्स) (अवधि 6 (2+4) वर्ष)	60% अंकों सहित 10वीं	20 मई 2017	02 जुलाई, 2017 को 10 बजे प्रवेश परीक्षा के आधार पर (सिलेबस-प्रोस्पैक्टस पेज नं. 90)
बी.एससी. कम्युनिटी विज्ञान (ऑनर्स) केवल लड़कियों के लिए (अवधि 4 वर्ष)	50% अंकों सहित 10+2 (विज्ञान के छात्रों को प्रवेश में वरीयता)	20 जून, 2017	अंकों की मेरिट के आधार पर 13 जुलाई, 2017 को 9 बजे होम साईंस कॉलेज

नोट: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार को कृषि विज्ञान केन्द्र, सदलपुर को स्थापित करने के लिए भूमि प्रदान करने के कारण ग्राम पंचायत, सदलपुर, तहसील मण्डी आदमपुर, जिला हिसार के मूल निवासी छात्रों के लिए एक-एक सीट रिजर्व है, परन्तु प्रवेश परीक्षा उतीर्ण करनी होगी तथा ग्राम पंचायत, सदलपुर से अनुमोदित होना पड़ेगा।

-डॉ. मदन खीचड़
प्रोफेसर, कृषि मौसम विज्ञान विभाग
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
मो. : 9416995529

परोपकारः सामूहिक प्रगति का आधार

समय कम है, काम ज्यादा है, बोझ अधिक है, तनाव अधिक है, अपेक्षाएं अधिक हैं। शरीर से ज्यादा काम लेना भी संभव नहीं है। शरीर में कमजोरी आनी स्वाभाविक है। परोपकार करना बाकी रहा तो परमात्मा को क्या जवाब दूंगा। ईश्वर मुझे कहेगा कि आप जैसा निठल्ला, कामचोर आलसी बनाकर मुझे शर्म आ रही है। उलाहाना मेरे सिर पर रहेगा, और ईश्वर द्वारा मुझ पर जो विश्वास था, उस पर खरा न उतरके मैंने बहुत विश्वासघात किया। बहाना बनाता हूँ कि मैं क्या करूं मेरे पास अच्छा कार्य करने के लिए पैसा नहीं, समय नहीं, योग्य नहीं, मौका नहीं, स्वस्थ्य ठीक नहीं, ज्ञान नहीं, हुनर नहीं, साधन नहीं, लेकिन मेरे बहानों को सुनकर ईश्वर मुस्कराकर कहते हैं कि ऐ मेरे लाल तूफानों को किसने रास्ते दिए, तूफान रास्ते स्वयं बनाते हैं, तुम्हें भी अपने शरीर को जागृत करना है और उसमें इतना जोश भरना कि तूफान में भी तुझे रोकने की शक्ति न हो, मनुष्य जीव कोई मामूली जीव नहीं, इस जीव में जितनी खूबियां, जितनी शक्ति, जितना ज्ञान, जितना विचार और जितना हौसला है उतना किसी जीव में नहीं। पत्थर बहुत मजबूत होता है, लेकिन कलाकार उसको तराश कर उपयोगी बना देता है, लेकिन तू एक ऐसा निठल्ला, आलसी, कुछ करने की हिम्मत भी नहीं करता और कहता है कि मैं अक्षम हूँ और मेरे पास साधन नहीं, साधन बनाया जाता है, खोजा जाता है। मौका बनाया जाता है, कठिन परिस्थितियों से मुकाबला करते हुए आगे बढ़ा जाता है।

समय कीमती है, समय की कदर कर। समय कभी वापिस नहीं आता भगवान पर भरोसा रख ईश्वर जिसका हाथ पकड़ लेता है, वह कभी हाथ छोड़ता नहीं, ज्ञान अपने आप आने लगता है। शास्त्र पढ़ने की आवश्यकता नहीं, साधन खोजने की जरूरत नहीं, किसी से मांगने की जरूरत नहीं। देने वाला अपने आप पहुंच जाएगा। जब देने वाला आएगा तब लेने वाला हाजिर नहीं मिलेगा। उस समय आप इधर-उधर समय मत गंवा देना, ईश्वर पर विश्वास रखो, लेकिन कर्म अवश्य करो। कर्म करना इंसान का धर्म है, धर्म की पालना करें, पाप तो कर सकता है पुण्य इकट्ठा करना उसके बस की बात नहीं, जब शक्कर खाए काम निकले तो कड़वी चीजें क्यों खाए। जब सस्ते में कोई मिले तो महंगे में क्यों खरीदे। केवल ईमानदारी से काम निकले तो बेइमानी क्यों करे। जब सच्चाई से काम निकले तो झूठ का सहारा क्यों ले, जब मेहनत से सब साधन सुविधाएं, तो बेकार निठल्ला क्यों बैठे, मेहनत ही सच्चा जीवन है। मेहनत करना ही धर्म है तो अधर्म का क्यों सहारा ले, हे ईश्वर मेरे से क्या गलती हो गई है, जो कि आप द्वारा दिया गया जन्म सार्थक नहीं रहा। आप मेरी मदद करें मैं रास्ता भूल गया हूँ, भटक गया हूँ। भटके हुए को मार्ग बताएं, मेरी तहेदिल से प्रार्थना को स्वीकार करें, मुझे सद्बुद्धि प्रदान करें।

जो विचार आया, वह लिख दिया, विचार लिखना, मनन करना, सोचना समझना और अपने जीवन में शुभ विचारों को लिखकर बार-बार पढ़कर मन में उतारना, उनका पालन करना मनुष्य के जीवन में उन्नति के लिए चार चांद लगाते हैं। विचार शुद्ध हो तो मनुष्य को कभी भी किसी भी प्रकार की तकलीफ नहीं आएगी और तरक्की के रास्ते खुल जाएंगे। कभी भी कार्य करने से पूर्व मन में लालच की भावना नहीं रखनी चाहिए। लालची प्रवृति को भगवान पसंद नहीं करते, तरक्की करनी है तो परोपकारी एवं पर हित कार्य की भावना अवश्य करनी चाहिए, मेरे मित्रो आप लोग बहुत भूले हुए हो, भूल से परोपकारी कार्य की मियाद ज्यादा है, लाभ अधिक, सुख अधिक, हारी-बीमारी नहीं है। लाभ ही लाभ है हानि की कोई गुंजाइश नहीं इसलिए लाभ को लेना चाहिए हानि को नहीं।

आज का मानव कहता है कि मैं बहुत ही समझदार हूँ, पढ़ा-लिखा हूँ। नए युग की नयी तकनीक की जानकारी जानता हूँ। घंटों का काम सैकण्डों में करता हूं। दूरी को जल्दी कवर कर लेता हूं। सब प्रकार की सुख-सुविधाओं से लेस हूं, गर्मी, सर्दी के विपरीत की परिस्थिति बना लेता हूं, लेकिन मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि क्या मानव शरीर, जब मृत्यु को प्राप्त कर लेता है तब उसको पुनर्जीवित कर सकता है क्या, नहीं तो ये सारी उपरोक्त साधन, सुविधाएं तो दे सकती हैं, लेकिन जीवन नहीं दे सकती। जीवन को जीवन ही रहने दो, मैं छोटा आदमी हूं, छोटे विचार हैं। विचार छोटे हो, इंसान की तरक्की नहीं होती, मनुष्य जीवन संघर्षमय है। संघर्ष ही जीवन है। मनुष्य को जीवन व्यतीत करने के लिए अनेक कठिन परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है। कभी बागों में, कभी बतारों में, कभी चौबारों और कभी कुछ भी नहीं मिलता ओर बेकार होकर घूमना पड़ता है। इन सारी चीजों को अपने दिल और दिमाग में रखकर जीवन बसर करना चाहिए। विचार स्वतंत्र होने चाहिए। विचार, गुलाम नहीं होने चाहिए। विचार, उधार नहीं लेने चाहिए। विचारों पर स्वयं का नियंत्रण होना चाहिए। अपने विचारों पर दूसरों का अतिक्रमण नहीं होना चाहिए। मनुष्य को शुद्ध विचार ही महान बनाते हैं। विचारों से महान व्यक्ति हमेशा पूजनीय होता है, हे ईश्वर मेरी शुभ इच्छा को पूर्ण करें, शुभ इच्छा है मुझे यह शक्ति प्रदान करें कि मेरे हृदय में हमेशा ही शुद्ध विचार हो उसे अशुभ विचारों की ओर न ले जाए। उससे पर हित कार्यों का सम्पन्न हो। इसी भावना से मनुष्य की तरक्की होती है। तरक्की करना इंसान का फर्ज है। बिना तरक्की, उन्नति के कोई कदर नहीं करता, इन्सान को यदि हंसी-खुशी जिन्दगी बसर करनी हो तो कर्म अवश्य करना चाहिए, अकर्मी को कोई नहीं पूछता, कर्म ही धर्म है और धर्म का पालन करें। धार्मिक बनें, जिसने सही धर्म को धारण कर लिया, उसने अपनी जिन्दगी को सफल बना लिया।

श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान एवं पूजनीय ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे धार्मिक ही बनाए और कभी भी अधर्म का साथ न दे।

-प्रेमचन्द बिश्नोई
सादुलशहर, जिला श्रीगंगानगर
मो.: 9414512329

एक निवेदन

बिश्नोई समाज की एक वेबसाइट bishnoisect.com का निर्माण कार्य चल रहा है, जिसमें विभिन्न भाषाओं में साहित्य उपलब्ध रहेगा। इसी सम्बन्ध में यदि किसी भी सज्जन के पास जाम्भाणी साहित्य (पीडीएफ ग्रन्थ, प्रकाशित लेख, बिश्नोई रीती रिवाज के लोकगीत, श्री गुरु जाम्भोजी के भजन साखियाँ, आरतियां हरजस, ऑडियो एवं वीडियो कोई भी), समाज से जुड़े दुर्लभ चित्र, ऐतिहासिक एवं बलिदान गाथाएं, पुरातन जानकारियां, हस्तलिखित ग्रन्थ आदि कुछ भी हो, तो वे नीचे लिखी ईमेल पर भेजें। बिश्नोइज्म पर आपके विचार 300 शब्दों में हमें जरूर लिख भेजें ।

Email: admin@bishnoisect.com, हमसे जुड़ने के लिए संपर्क करें- www.facebook.com/bishnoisect, www.youtube.com/bishnoisect, www.bishnoisect.com, Mobile/Whatsapp No. 09466758300

चिम्पी चोला धाम, जांगलू (बीकानेर)

RNI No. : 12406/57
POSTAL REGD. NO. : L/Regd. NP/HSR/01/2017-2019
L/WPP/HSR/03/17-19

POSTAGE PREPAID IN CASH
POSTED AT : HISAR H.O.
POSTING DATE : 1st OF EVERY MONTH

GURU JAMBHESHWAR SR. SECONDARY SCHOOL

मुख्य विशेषताएँ

- खुले व हवादार कक्षा कक्ष
- सुसज्जित पुस्तकालय
- अनुभवी व प्रशिक्षित अध्यापक/अध्यापिकाएँ
- उपकरणों से लैस विज्ञान प्रयोगशालाएँ
- विद्यालय परिसर में ही खेल के मैदान
- दूसरे विद्यालयों की अपेक्षा कम फीसें
- नन्हें बच्चों के खेल के लिए सभी प्रकार के झूले व खिलौने उपलब्ध
- अच्छी परिवहन सुविधाएँ
- विद्यार्थियों के नियमित सर्वांगीण विकास पर पूरा बल

ADMISSION OPEN
For Nursery to XII

Jawahar Nagar Hisar

7015730783, 9315117297 gurujambheshwar029@gmail.com

DOREXPrinters 9896011117

मुद्रक, प्रकाशक प्रदीप बैनीवाल, प्रधान, बिश्नोई सभा, हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 मई, 2017 को मुख्य डाकघर, हिसार से प्रेषित किया।